A Daily News Magazine
भोपाल
शुक्रवार, 10 अप्रैल, 2026

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 217, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

जातिवाद शहरों से खत्म नहीं हुआ, बस उसने अंग्रेज़ी सीख ली है

वैभव वानखेड़े

जातिवाद गांवों और 'पुराने जमाने के भारत' की समस्या है, यह बात मुझे इतनी बार बताई गई है कि अब गिनती याद नहीं। जैसे ही हम कांच की इमारतों, गेट वाली हाउसिंग सोसाइटियों, स्टार्ट-अप कंपनियों के ऑफिस और खुद को 'प्रगतिशील' कहने वाले शहरों में पहुंचते हैं, ऐसा माना जाता है कि समाज की पुरानी ऊंच-नीच खत्म हो जाती है।

असल में, शहरों में जातिवाद अपना रूप बदल लेता है। यह गिरगिट की तरह माहौल के हिसाब से रंग बदलता है। अब यह हमेशा हिंसा के रूप में नहीं दिखता, लेकिन हिंसा इसकी असली भाषा है। शहरी भारत में जातिवाद कोट-पैंट पहनता है, लैपटॉप रखता है और तेज़ अंग्रेज़ी बोलता है। यह 'मेरिट' यानी योग्यता के नाम पर आता है, यह नफासत के रूप में सामने आता है।

इसलिए अब यह और भी खतरनाक हो गया है क्योंकि इसे नकारना आसान हो गया है। शहरों में अब कोई भी खुद को जातिवादी नहीं दिखाना चाहता। इसलिए भाषा बदल गई है। अब हम यह नहीं कहते कि कोई व्यक्ति अपनी जाति की वजह से आगे या पीछे है। हम कहते हैं कि वह 'फिट' नहीं है। हम यह नहीं कहते कि उसके पास सामाजिक पहचान या पहुंच नहीं है। हम कहते हैं कि उसे और 'प्रेजेंटेबल' बनने की ज़रूरत है। हम यह नहीं कहते कि उसे कुछ समूहों से बाहर रखा जाता है। हम कहते हैं कि माहौल 'उसके लिए नहीं' है। कई बार कठोरता मीठे शब्दों में छिपी होती है।

मैंने देखा है कि बोलने का तरीका भी पहचान बन जाता है। एक सरनेम वही काम कर देता है जो पहले जनगणना करती थी। जो लोग खुद को 'मॉडर्न' और 'उदार' बताते हैं, वे भी नाम, भाषा या आत्मविश्वास देखकर तुरंत राय बना लेते हैं। मैंने देखा है कि किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति को इंटरव्यू में सिर्फ इसलिए रिजेक्ट कर दिया गया क्योंकि वह 'कल्चर के लिए फिट' नहीं था। 'कल्चर' अक्सर वही लोग तय करते हैं जिनकी पहचान पहले से मजबूत होती है।

मैं ऐसी बैठकों में गया हूं, जहां अंग्रेज़ी यह तय करती है कि किसे गंभीरता से लिया जाएगा। सिर्फ सही अंग्रेज़ी नहीं, बल्कि साफ, तेज़, शहरी और आत्मविश्वास वाली अंग्रेज़ी ऐसी अंग्रेज़ी जो सिर्फ विचार नहीं बताती बल्कि यह भी बताती है कि आप किस माहौल से आते हैं। अगर आप उनके जैसे नहीं बोलते, उनके जैसे नहीं पहनते या उनके जैसे व्यवहार नहीं करते, तो आपको अलग माना जाता है।

यहीं शहरों में जातिवाद चुपचाप काम करता है। इसलिए आज 'मेरिट' यानी योग्यता पर जो बहस हो रही है, वह मुझे ईमानदार नहीं लगती। 'मेरिट' को साफ और निष्पक्ष माना जाता है, लेकिन कई बार यह छिपा हुआ पक्षपात होता है। अक्सर 'मेरिट' का मतलब होता है अपने जैसे लोगों को चुनना।

'कल्चर के लिए फिट' भी एक नरम झूठ है। असल में इसका मतलब होता है कि क्या आप हमारे जैसे दिखते हैं, बोलते हैं, हमारे जैसे मज़ाक करते हैं, हमारे जैसे माहौल से आते हैं या नहीं। 'नफासत' भी एक गहरा शब्द है। कौन तय करता है कि क्या शालीन है? कॉरपोरेट भारत में शालीनता अक्सर ऊंची जातियों की आदतों से जुड़ी होती है। ये आदतें तटस्थ नहीं होतीं, बल्कि परिवार और माहौल से सीखी जाती हैं और क्योंकि ये सहज लगती हैं, इन्हें उत्कृष्टता समझ लिया जाता है।

शहरों में जातिवाद हमेशा सीधे सज़ा नहीं देता, बल्कि वह भरोसा और सहजता छीन लेता है। शहर कहता है कि जाति भूल जाओ, लेकिन उसके असर को झेलना पड़ता है। जाति कोई कल्पना नहीं है, यह एक व्यवस्था है। व्यवस्था सिर्फ इसलिए खत्म नहीं होती क्योंकि लोग उसे मानना बंद कर दें।

सबसे चिंता की बात यह है कि शहरों में जातिवाद प्रगति की भाषा बोलकर ज़िंदा रहता है। कागज़ पर विविधता की बात होती है, लेकिन नौकरी वही लोगों को मिलती है। इसीलिए डॉ. बी.आर. आंबेडकर को सिर्फ फोटो या पोस्टर तक सीमित नहीं करना चाहिए। उन्होंने सिर्फ बराबरी की बात नहीं की थी, बल्कि समाज की पूरी संरचना बदलने की बात की थी। कॉरपोरेट दुनिया में आंबेडकर लगभग नज़र नहीं आते। हम उन परंपराओं को मनाते हैं जो ऊंच-नीच को मजबूत करती हैं, लेकिन उस विचारक को जगह देने में हिचकते हैं जिसने पूरी ज़िंदगी ऊंच-नीच खत्म करने में लगा दी।

पति की लंबी उम्र के लिए व्रत रखने वाली महिला को समर्पण और प्रेम का प्रतीक बताया जाता है, लेकिन सवाल यह है कि त्याग हमेशा महिलाओं से ही क्यों जुड़ा होता है? पुरुषों के लिए महिलाओं से ही बलिदान क्यों अपेक्षित होता है? आज्ञाकारिता को रोमांस क्यों माना जाता है? डॉ. आंबेडकर ने हिंदू कोड बिल के जरिए महिलाओं को कानूनी अधिकार दिलाने की कोशिश की, फिर भी उन्हें अक्सर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। यह विडंबना है कि महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ने वाले व्यक्ति को कम याद किया जाता है, जबकि पितृसत्ता को मजबूत करने वाली परंपराएं खुले तौर पर मनाई जाती हैं।

शहरी भारत प्रगति का दिखावा पसंद करता है। उसे आधुनिक शब्द, पैनल चर्चा, समावेश के कार्यक्रम और सशक्तीकरण के हैशटैग पसंद हैं, लेकिन प्रगति सिर्फ शब्द नहीं है। प्रगति का मतलब है सच का सामना करना कि जातिवाद खत्म नहीं हुआ है। उसने बस आधुनिक रूप ले लिया है।

शहरी भारत आज जातिवाद खत्म होने के दौर में नहीं है, बल्कि ऐसा दौर है जहां लोग जातिवाद स्वीकार नहीं करना चाहते। वे ऊंच-नीच का फायदा तो चाहते हैं, लेकिन उसे मानना नहीं चाहते। फिर भी शहर एक मौका देता है, जहां विरोधाभास दिखता है। जो लोग बराबरी की बात करते हैं, कई बार वही लोग छिपे रूप में भेदभाव को बनाए रखते हैं। अगर जातिवाद को मानना मुश्किल हो गया है, तो जरूरी है कि उसे बनाए रखने वाली सोच को भी खत्म किया जाए। अंग्रेज़ी को चरित्र मत समझिए। नफासत को सिद्धांत मत मानिए। जातिवाद खत्म नहीं हुआ है। उसने बस साफ कपड़े पहन लिए हैं, ऑफिस का व्यवहार सीख लिया है और व्यवस्थित जगहों में फिट हो गया है। यह खुलकर अपमान करने वाला नहीं, बल्कि चालाक जातिवाद है। यह वही जातिवाद है जो 'मेरिट' और 'कल्चर के लिए फिट' जैसे शब्दों का इस्तेमाल करता है. यह तय करता है कि कौन अपना है और किसे बार-बार खुद को साबित करना है। जातिवाद खत्म नहीं हुआ, बस उसे पहचानना मुश्किल हो गया है क्योंकि अब वह शहरों की भाषा बोलता है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

तीन राज्यों से गुजरने वाला

अनोखा ग्रीन कॉरिडोर- 14 अप्रैल को प्रधानमंत्री करेंगे उद्घाटन

210 किमी लंबा दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस-वे, 100 की रफ्तार से दौड़ेंगे वाहन, जानवर रहेंगे सुरक्षित

नई दिल्ली/ देहरादून (एजेंसी)। 210 किमी लंबे और तीन राज्यों से गुजरने वाले इस एक्सप्रेस-वे का 20 किमी का हिस्सा राजाजी टाइगर रिजर्व में आता है। एक्सप्रेस-वे का 12 किमी का हिस्सा एशिया का सबसे लंबा वाइल्डलाइफ एलिवेटेड कॉरिडोर है। जानवर इसके नीचे से सुरक्षित निकल रहे हैं।

पहाड़ों के बीच बल खाती एक सिंगल लेन सड़क सामने अचानक हाथियों का झुंड, पीछे लंबा जाम। कभी उफनती नदी तो कभी शिवालिक पहाड़ियों से गिरता मलबा। पहले ऐसा था दिल्ली से देहरादून रोड पर आने वाला मोहंड बेल्ट। 210 किमी लंबे और तीन राज्यों से गुजरने वाले इस एक्सप्रेस-वे का 20 किमी का हिस्सा राजाजी टाइगर रिजर्व में आता है। यह हिस्सा अब पूरी तरह बदल चुका है।

मोहंड घाटी के ऊपर बने एलिवेटेड कॉरिडोर। गाड़ी 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से बिना ब्रेक, बिना जाम दौड़ रही हैं और नीचे हाथियों का झुंड गुजर रहा था। 20 किमी लंबे हिस्से में एलिवेटेड पार्ट 12 किमी का है। यह ग्रीन कॉरिडोर पर्यावरण संरक्षण और विकास के बीच संतुलन का बेहतरीन उदाहरण बनने जा रहा है। एक्सप्रेस-वे का उद्घाटन 14 अप्रैल को पीएम नरेंद्र मोदी करेंगे।

मोहंड घाटी जिस बरसाती नदी से घिर जाती थी, वो अब नजर नहीं आती, क्योंकि उसे इस एलिवेटेड रोड के नीचे से निकाला गया है।

जंगल और विकास साथ-साथ

पे-पर-यूज टोल सिस्टम - टोल पारंपरिक नाकों वाला नहीं, बल्कि क्लोज्ड टोलिंग सिस्टम होगा। एंट्री-एग्जिट के आधार पर दूरी के हिसाब से शुल्क कटेगा। फास्टैग से बिना रुके भुगतान, जाम की समस्या नहीं। सहारनपुर के कुम्हारहेड़ा में एक टोल प्लाजा पहले से सक्रिय, बाकी एंट्री-एग्जिट पॉइंट्स पर टोल गेट्स।

इस एक्सप्रेस-वे से क्या बदलेगा?

- **सफर तेज, खर्च कम** - 6-7 घंटे का सफर अब 2.5-3 घंटे में, दूरी 260 किमी से 210 किमी होगी।
- **सुरक्षा बेहतर**- 20 किमी जोखिम भरा पहाड़ी रास्ता अब 12 किमी एलिवेटेड, एक्सीडेंट रिस्क कम।
- **प्रदूषण घटेगा**- सालाना 93 लाख किलो कार्बन उत्सर्जन घटेगा।
- **पर्यटन, व्यापार बूस्ट**- हरिद्वार-ऋषिकेश-देहरादून का सफर आसान, छुटमलपुर इंटरचेंज से लॉजिस्टिक्स तेज। पर्यटन और व्यापार को बढ़ावा मिलेगा।
- **छोटे शहरों को फायदा**- बागपत, शामली, सहारनपुर जैसे शहरों में एक्सप्रेस-वे पर नए ग्रोथ हब बनेंगे।

शरद की सुबह

वैशाख! आ रहे हो
तो इस बार वैसे मत आओ
जैसे आते रहे हो हमेशा चैत के बाद,
इस बार आओ
तो धूप की प्यालियों में
जीवन की मदिरा भर कर लाओ।
आओ, तो ऐसे आओ
कि शगुन होने लगे,
अनिष्ट की शंकाएँ टूटे किसी तरह।
वैशाख! आ रहे हो
तो बुद्ध की करुणा ले कर आना,
सशस्त्र जामदग्न्य को भी ले आना
कि वे एक-एक विषाणु को बुझा डाले यहाँ।
चाँदी की परत से ढँक जाये धरती,
अमलतास की तरह
झूमने लगे आदमी का मन।
वैशाख! आ रहे हो
तो बहुत सावधान हो कर आना,
बस्तियों में ग्लानि है, वैमनस्य है,
प्रमाद है, फीकापन है,
सब देख रहे हैं तुम्हें
चमकीले वस्त्र पहन कर
वीर योद्धा की तरह आते हुए।
आओ, तो उखाड़ फेंकना
भय के वे सब स्मारक
जो खड़े हुए चतुष्पथों पर।
वैशाख! आ रहे हो
तो नया उत्साह ले आना,
नयी उमंग भर देना
आँखों की इन पुतलियों में।
फिर शहनाई बजे,
फिर स्वस्तिपाठ हो।

- मुरलीधर

● सुप्रीम कोर्ट में सबरीमाला केस की सुनवाई में सरकार बोली

कई मंदिरों में प्रसाद रूप में वितरित होती है शराब

● *ऐसा तो आप कल इस पर भी आपत्ति उठा सकते हैं?*

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट में सबरीमाला केस की सुनवाई के दौरान भारत के मंदिरों में रीति-रिवाजों का जिक्र किया। एएसजी नटराज ने कहा, दक्षिण भारतीय मंदिरों में प्रसाद के रूप में मदिरा दी जाती है। कल को आप इस पर यह आपत्ति नहीं उठा सकते कि मदिरा न दी जाए।

एक उदाहरण देता हूं, कई मंदिरों में शाकाहारी भोजन परोसा जाता है, और अगर कोई व्यक्ति अपनी पसंद या अंतरात्मा की आवाज पर कहता है कि वह मांसाहारी भोजन करना चाहता है, तो वह किसी खास संप्रदाय के पास जाकर यह नहीं कह सकता कि मेरा यह अधिकार है और मुझे यही परोसा जाना चाहिए। उसे उन श्रद्धालुओं के अधिकारों में दखल देने का कोई अधिकार नहीं है।

जिन पर सुप्रीम कोर्ट फैसला करेगा

- सबरीमाला मंदिर में महिलाओं का प्रवेश
- दाऊदी बोहरा समुदाय में महिलाओं का खतना
- मस्जिदों में महिलाओं का प्रवेश
- पारसी महिलाओं का अग्निमंदिर में प्रवेश
- मुस्लिम पर्सनल लॉ से जुड़े लैंगिक भेदभाव के प्रश्न।

वैद्यनाथन बोले-

धर्म से जुड़े तमाम उदाहरण, जहां अदालत दखल नहीं देतीं- केरल में जब पुर्तगाली आए, तो उन्होंने वहां के सीरियन ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को कैथोलिक बनाने की कोशिश की। लोगों ने इसका विरोध किया। उन्होंने एक जंजीर पकड़कर कहा कि कुछ भी हो जाए, हम अपना धर्म नहीं बदलेंगे। इसी तरह आयरलैंड में जब ब्रिटिश शासन था, तो कैथोलिक लोगों के साथ भेदभाव किया जाता था। उन्हें जमीन रखने जैसे अधिकार नहीं दिए जाते थे और उन पर धर्म बदलने का दबाव भी डाला जाता था। इसी वजह से आज तक वहां कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट के बीच तनाव बना हुआ है। कुल मिलाकर बात यह है कि धर्म से जुड़े ऐसे विवाद बहुत संवेदनशील होते हैं, इसलिए अदालतें आमतौर पर इनमें हस्तक्षेप नहीं करतीं या फैसला नहीं देतीं।

सीजेआई बोले- हर सवाल का जवाब सिर्फ थ्योरी से नहीं दिया जा सकता

वैद्यनाथन - अनुच्छेद 32 (फंडामेंटल राइट्स की सुरक्षा) के तहत हर धार्मिक समूह अपने अधिकारों की रक्षा के लिए कोर्ट जा सकता है। अगर सरकार सामाजिक सुधार के लिए कोई कानून बनाती है और उसका असर धार्मिक प्रथाओं पर पड़ता है। तो उसका असर अनुच्छेद 26 (धार्मिक संस्थाओं के अधिकार) पर भी पड़ सकता है। यानी यह कहना सही नहीं है कि अनुच्छेद 26 पर कभी असर ही नहीं पड़ेगा। इस सवाल का जवाब सिर्फ थ्योरी से नहीं दिया जा सकता। असल में यह हर केस के हिसाब से तय होगा।

कृषि केवल आजीविका नहीं, हमारी संस्कृति और अर्थव्यवस्था की है धुरी : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि कृषि केवल आजीविका नहीं है, बल्कि यह हमारी संस्कृति और परंपरा का अभिन्न हिस्सा रही है। कृषि हमारी अर्थव्यवस्था की धुरी है और प्रदेश के समग्र विकास का आधार भी है। उन्होंने कहा कि आज कृषि एक नए मोड़ पर खड़ी है, जहां जलवायु परिवर्तन, अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़, मृदा की घटती उर्वरता और बाजार की अस्थिरता जैसी चुनौतियां हमें नई सोच और नवाचार की ओर प्रेरित कर रही हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश के कृषि क्षेत्र में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है। किसानों की आय बढ़ाने के लिए योजनाओं का विस्तार हुआ है, तकनीक को खेतों तक पहुंचाया गया है और नवाचार को जन-आंदोलन का रूप दिया गया है। 'ड्रोन दीदी' जैसी पहल के माध्यम से महिलाएं भी आधुनिक कृषि तकनीक से जुड़ रही हैं, वहीं कृषि सखियों के माध्यम से जैविक खेती, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन और आधुनिक कृषि तकनीकों की जानकारी किसानों तक पहुंचाई जा रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 'कृषिः मूलं जीवनम्' का भाव हमारे समाज की जीवन-दृष्टि को व्यक्त करता है। कृषि धन्य है, पवित्र है और जीवन का मूल आधार है। इसी भावना को आत्मसात करते हुए 'समृद्ध किसान-समृद्ध मध्यप्रदेश' की थीम पर पूरे वर्ष 2026 को प्रदेश में कृषि उत्सव मनाया जा रहा है।

एग्री स्टैक योजना में म.प्र. अग्रणी

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार किसानों के जीवन को आसान बनाने के लिए डिजिटल तकनीक का व्यापक उपयोग कर रही है। एग्रीस्टैक योजना के अंतर्गत किसानों का संपूर्ण डेटा डिजिटल रूप में उपलब्ध कराया जा रहा है और इस योजना के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश देश में अग्रणी रहा है। डिजिटल किसान डेटा इंटीग्रेशन से किसानों की जमीन, फसल और उत्पादन से जुड़ी जानकारी एक क्लिक पर उपलब्ध हो रही है, जिससे सरकारी योजनाओं का लाभ तेजी से किसानों तक पहुंचाया जा रहा है। मोबाइल और ऑनलाइन प्लेटफार्म के माध्यम से किसानों को मौसम, बाजार भाव और फसल प्रबंधन से जुड़ी जानकारी भी उपलब्ध कराई जा रही है।

कृषि के क्षेत्र में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना समय की आवश्यकता

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कृषि के क्षेत्र में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना समय की आवश्यकता है। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की भावना के अनुरूप जय जवान-जय किसान के साथ जय विज्ञान जोड़ा गया था और वर्तमान दौर में इसमें 'जय अनुसंधान' को भी जोड़ने का समय आ गया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार किसानों को आधुनिक तकनीक, वैज्ञानिक खेती, कृषि उत्पादों में वैल्यू एडिशन और बेहतर मार्केट लिंकेज के माध्यम से सशक्त बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। प्रदेश में खेती में नवीन पद्धतियों और फसल विविधीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है।

असम, केरलम और पुडुचेरी में विधानसभा चुनाव में हुई जमकर वोटिंग

गुवाहाटी/तिरुवनंतपुरम/पुडुचेरी (एजेंसी)। देश के तीन महत्वपूर्ण राज्यों-केंद्रशासित प्रदेशों में आज विधानसभा चुनाव के लिए मतदान हुआ। असम, केरलम और पुडुचेरी में एक ही चरण में वोटिंग कराई गई। मतदान सुबह 7 बजे शुरू होकर शाम 6 बजे तक चला। सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे,हजारों पुलिसकर्मी और केंद्रीय बल तैनात थे। दोपहर 5 बजे तक असम में 84.42 प्रतिशत, केरलम में 75.01 प्रतिशत और पुडुचेरी में 86.92 प्रतिशत मतदान हो गया था। देश के तीन राज्यों असम, केरलम और पुडुचेरी में आज विधानसभा चुनाव के लिए सिंगल फेज में वोटिंग चल रही है। कुल 296 सीटों पर मतदान हुआ।

गोगोई बोले-

चुनाव के बाद एक शक्तिशाली और नया असम उभरेगा- जोरहाट (असम) में राज्य कांग्रेस अध्यक्ष गौरव गोगोई ने अपना वोट डाला और कहा कि चुनाव के बाद एक शक्तिशाली, निडर, आत्मविश्वासी और नया असम उभरेगा।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 10 अप्रैल 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

● पश्चिम बंगाल की चुनावी रैली प्रधानमंत्री मोदी बोले-

मां-मानुष डरे हुए हैं टीएमसी राज में

कोलकाता (एजेंसी)। पीएम मोदी गुरुवार को पश्चिम बंगाल के बीरभूम में जनसभा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि-हम ऐसा समाज देखने चाहते हैं। जहां हर कोई भय से मुक्त हो। ये मां, माटी और मानुष की बात करते हैं। मां आज रो रही है, माटी

पर घुसपैठियों का कब्जा हो रहा है और मानुष भयभीत है, डरा हुआ है। उन्होंने कहा कि- गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ऐसा समाज देखना चाहते थे जहां हर कोई भय से मुक्त हो, लेकिन टीएमसी के महाजंगलराज ने एकदम उल्टा कर दिया। टीएमसी ने देश की पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति का अपमान किया था। इससे पहले आज ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को पश्चिम बंगाल के आसनसोल में जनसभा की। उन्होंने कहा कि आपने टीएमसी पर विश्वास किया था, लेकिन टीएमसी ने बंगाल में निर्ममता की सारी हदें पार कर दी हैं। उन्होंने कहा कि 4 मई के बाद हर गुंडागर्दी का हिसाब लिया जाएगा। बंगाल में अब टीएमसी का भय नहीं, भाजपा का भरोसा चलेगा। लेफ्ट और कांग्रेस पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि- बीते कुछ दशकों में बंगाल ने हर पार्टी पर भरोसा करके देखा है। पहले कांग्रेस फिर लेफ्ट और फिर कांग्रेस। लेकिन ये सब एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं। इन लोगों नो सिर्फ बंगाल को धोखा दिया ।

नीतीश दिल्ली पहुंचे, बिहार में 13 अप्रैल बाद नई सरकार

आज राज्यसभा सांसद के रूप में लेंगे शपथ

नईदिल्ली (एजेंसी)। बिहार में सियासी उलटफेर की उल्टी गिनती शुरू हो गई है। राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार आज दिल्ली चले जाएंगे। इसके बाद शुक्रवार को सीएम नीतीश कुमार राज्यसभा सांसद के पद की शपथ ले लेंगे। इसी के

साथ बिहार में नई सरकार के आकार लेने का काउंटडाउन भी शुरू हो जाएगा। बिहार के मंत्री और मुख्यमंत्री के करीबी सहयोगी विजय कुमार चौधरी ने साफ कर दिया है कि नीतीश कुमार शुक्रवार को राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ लेंगे। बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के दिल्ली रवाना होते ही सियासी हलचल तेज हो गई है। वहीं भाजपा के नेता और उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा भी दिल्ली रवाना हुए। कल भाजपा की बैठक में दोनों उप मुख्यमंत्री शामिल होंगे। जिस तरह से नई सरकार के गठन की कवायद है उसको लेकर बैठकों का दौर लगातार जारी है। 48 से 72 घंटे के अंदर नए मुख्यमंत्री के नाम से पर्दा हटने की संभावना जताई जा रही है। सियासी गलियारों में चर्चाओं का दौर जारी है।

'जहरीले सांप' बयान पर नितिन बोले-

ये कांग्रेस की भाषा : खड़गे सिर्फ भाजपा-आरएसएस के खिलाफ बोल रहे, समाज में जहर घोलने की कोशिश

नई दिल्ली (एजेंसी)। बीजेपी अध्यक्ष नितिन नवीन ने गुरुवार को मल्लिकार्जुन खड़गे के 'भाजपा-आरएसएस को जहरीला

सांप' बयान पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि यह टिप्पणी लोगों को सांप्रदायिक आधार पर भड़काने की कोशिश है और सस्ती मानसिकता दिखाती है। नवीन ने मीडिया से कहा कि कांग्रेस की यह पुरानी परंपरा रही है कि वह ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करती है, जिनका समाज पर नकारात्मक असर पड़ता है। ऐसे बयानों के बाद जनता भाजपा को जीत का आशीर्वाद देती है। उन्होंने खड़गे के बयान के पीछे गांधी परिवार को जिम्मेदार ठहराया। कहा- ये गांधी परिवार के शब्द हैं। राहुल और सोनिया रिमोट कंट्रोल से पार्टी चलाते हैं और खड़गे उसी के तहत बोलते हैं।

ड्रोन से रोबोट वुल्फ तक | चीन की बिना इंसान वाली सेना

'ड्रैगन' की नई युद्ध रणनीति से दुनिया हैरान

बीजिंग/नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन तेजी से आधुनिक और बिना इंसान वाले युद्ध की दिशा में आगे बढ़ रहा है। हाल ही में सामने आई रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि चीन ऐसे रोबोट कुत्ते बना रहा है, जो 'भेड़ियों के झुंड' की तरह मिलकर लड़ सकते हैं। ये रोबोट न सिर्फ खुद फैसले ले सकते हैं, बल्कि ड्रोन के साथ मिलकर जटिल सैन्य मिशन भी पूरा कर सकते हैं।

चीन की सेना के लिए तैयार किए गए ये नए रोबोट पुराने मॉडल से काफी अलग हैं। पहले ये सिर्फ एक सैनिक की मदद करते थे, लेकिन अब ये एक साथ मिलकर काम करने वाला पूरा युद्ध सिस्टम बन गए हैं। चीन के सरकारी टीवी ने भी अपने एक कार्यक्रम में इन 'रोबोट वुल्फ' की क्षमता दिखाई है। इन रोबोट्स को ऐसे बनाया गया है कि वे शहरों में युद्ध के दौरान एक-दूसरे से जुड़कर काम कर सकें। इनके पास एक साझा नेटवर्क होता है, जिसे एक तरह का 'कॉमन दिमाग' कहा जा रहा है, जिससे ये आपस में जानकारी शेयर करते हैं और साथ में फैसले लेते हैं।

अलग-अलग काम, अलग-अलग रोबोट

इन रोबोट कुत्तों को अलग-अलग काम के हिसाब से तैयार किया गया है। जैसे 'शैडो' वर्जन निगरानी और जानकारी जुटाने का काम करता है, जबकि 'ब्लडी' वर्जन हमला करने और दुश्मन को खत्म करने के लिए बनाया गया है। इसके अलावा 'पोलर' नाम का रोबोट सपोर्ट और लॉजिस्टिक्स का काम संभालता है। खास बात यह है कि 'ब्लडी' रोबोट को माइक्रो मिसाइल, ग्रेनेड लॉन्चर और ऑटोमैटिक राइफल जैसे हथियारों से लैस किया जा सकता है, जिससे इसकी ताकत काफी बढ़ जाती है। इन नए रोबोट्स की गति भी बेहतर है और ये 15 किमी प्रति घंटे तक दौड़ सकते हैं। ये 25 किलो तक वजन उठा सकते हैं और कठिन इलाकों में भी काम कर सकते हैं।

ड्रोन और एआई से मिलकर हमला- चीन ने सिर्फ जमीन पर ही नहीं, हवा में भी ऐसी तकनीक तैयार की है। 'एटलस' नाम का ड्रोन सिस्टम एक साथ 96 ड्रोन को नियंत्रित कर सकता है, जो निगरानी, हमला और दुश्मन की संचार प्रणाली को बाधित करने जैसे काम करते हैं।

● **लेजर हथियार और समुद्री ड्रोन-** चीन ने ड्रोन को रोकने के लिए लेजर हथियार भी विकसित किए हैं, जैसे 'गुआंगजियान 11-ई' और 'गुआंगजियान 21-ए', जो दुश्मन के ड्रोन को निष्क्रिय या नष्ट कर सकते हैं। समुद्र में भी चीन ने बिना चालक वाले जहाज तैयार किए हैं, जैसे 'एल30', जो खुद रास्ता तय कर सकते हैं, बाधाओं से बच सकते हैं और जरूरत पड़ने पर दुश्मन को घेर सकते हैं। चीन के वैज्ञानिकों का लक्ष्य भविष्य में पूरी तरह स्वचालित सिस्टम बनाना है, जो बिना इंसानी हस्तक्षेप के बड़े स्तर पर युद्ध मिशन को अंजाम दे सकें। विशेषज्ञ मानते हैं कि 'वुल्फ पैक' मॉडल भविष्य के युद्ध का नया चेहरा बन सकता है।

एमपी में गेहूं खरीदी में देरी पर कांग्रेस का प्रदर्शन

जीतू पटवारी बोले- सरकार ने रणनीतिक तरीके से घोटाला किया, 4 संभागों में आज से गेहूं खरीदी शुरू

भोपाल (नप्र)। एमपी में गुरुवार से चार संभागों में गेहूं खरीदी शुरू हो गई है। इस बार गेहूं खरीदी देरी से शुरू होने के पीछे सरकार इजराइल-ईरान युद्ध का हवाला दे रही है। ऐसे में गेंहू खरीदी में देरी को कांग्रेस ने प्रदेशभर में प्रदर्शन किया। खंडवा में कांग्रेस में प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने बैरिकेडिंग तोड़कर कलेक्ट्रेट पहुंचकर जमकर नारेबाजी की। करीब 5 हजार से ज्यादा कांग्रेसी प्रदर्शन में शामिल हुए है। रतलाम में जिला कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में कृषि उपज मंडी में धरना दिया गया, जिसमें बड़ी संख्या में किसान भी शामिल हैं। भोपाल-श्योपुर में भी कांग्रेस ने नारेबाजी की।

इधर, पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने आरोप लगाया कि सरकार ने रणनीतिक तरीके से घोटाला किया है। बारदाने की कमी का बहाना बनाकर गेहूं खरीदी नहीं की गई। यह किसानों को धोखा देने की कोशिश है।

जीतू पटवारी बोले- 25 प्रतिशत गेहूं ओपन मार्केट में बिक चुका- भोपाल से छतरपुर रवाना होने से पहले पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने कहा कि तथ्यों से साबित हो गया है कि भाजपा, शिवराज सिंह चौहान, नरेंद्र मोदी और मोहन यादव किसान विरोधी हैं। लगभग 10 लाख क्विंटल गेहूं ओपन मार्केट में बिक चुका है। करीब 25 प्रतिशत गेहूं 1600 से 2000 रुपए प्रति क्विंटल के भाव में बेचा गया है। पटवारी ने कहा कि मुख्यमंत्री मोहन यादव ने 2700 रुपए प्रति क्विंटल गेहूं, 3100 रुपए धान और 6000 रुपए सोयाबीन का वादा किया था, लेकिन उसे पूरा नहीं किया गया। उन्होंने कहा कि किसान कल्याण वर्ष होने के बावजूद मध्य प्रदेश में किसानों का शोषण हो रहा है।

बाघ ने शख्स को मारकर हाथ-पैर खाए

एसटीआर में शव के पास बैठा रहा, सिर-धड़ अलग किया; टुकड़ों में डेडबॉडी ले गए परिजन

नर्मदापुरम (नप्र)। मध्य प्रदेश के नर्मदापुरम के सतपुड़ा टाइगर रिजर्व में ग्रामीण पर बाघ ने हमला कर दिया। ग्रामीण को मारने के बाद उसके हाथ और पैर खा लिए। बाघ शव के पास ही बैठा रहा। मामला केसला थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, मृतक की पहचान सुधराम चौहान (49) पिता हजारी चौहान (निवासी चनागढ़ झुनकर) के रूप में हुई है। सिर और धड़ अलग-अलग मिले हैं। आसपास खून के बिखरे कतरे मिले हैं।

रातभर घर नहीं आया, सुबह खोजने निकले परिजन- मृतक के भाई रघुवर चौहान ने बताया कि सुधराम बुधवार दोपहर तवा नदी पार कर एसटीआर के कोर क्षेत्र में महुआ बीनने के लिए गया था। शाम तक जब वह घर नहीं लौटा, तो परिजन उसे खोजने के लिए गुरुवार सुबह जंगल में निकले।

एसटीआर के जंगल में खोजबीन के दौरान ग्रामीण जब महुआ के पेड़ के पास पहुंचे, तो वहां बाघ बैठा दिखाई दिया। उसी के बाजू में कटा हुआ सिर और धड़ पड़ा था। बगल में हाथ-पैर के टुकड़े भी दिखाई दिए। पैंट भी पड़ा हुआ था।

शव के पास बाघ को देखकर डरे परिजन- शव के पास बाघ को बैठा देखकर परिजन और ग्रामीण बुरी तरह सहम गए। हालांकि, कुछ देर बाद उन्होंने हिम्मत कर बाघ को वहां से भगाया। इसके बाद वे शव के पास पहुंचे। घटना की जानकारी तत्काल एसटीआर कार्यालय और पुलिस थाने में दी गई।

मामले की जानकारी मिलते ही केसला पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव के टुकड़ों को कब्जे में लिया। आधार कार्ड से मृतक की पहचान की गई। पुलिस ने पंचनामा कार्रवाई के बाद शव को सुखतवा पहुंचाया।

टीआई और फील्ड डायरेक्टर ने की घटना की पुष्टि

मामले में केसला थाना प्रभारी मदन लाल पवार ने बताया कि मौके पर पैंट और शव के टुकड़े मिले थे। शव को पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया गया है। परिजनों ने अंतिम संस्कार कर दिया है। मामले की जांच जारी है। वहीं, एसटीआर की फील्ड डायरेक्टर राखी नंदा ने घटना की पुष्टि की। उन्होंने बताया कि एक आदिवासी ग्रामीण को बाघ ने खा लिया है। घटना स्थल बैकवॉटर क्षेत्र से लगा हुआ है, जो एसटीआर में आता है।

छाती पर बैठकर सड़क पर चाकू से सिर काटा

● अररिया में बीच रोड पर सिर रखा, भीड़ ने आरोपी को भी पीटकर मार डाला

अररिया (एजेंसी)। अररिया में गुरुवार को एक शख्स ने दूसरे शख्स का गला काटकर उसका सिर बीच सड़क पर रख दिया। मृतक की पहचान मो. नवी हुसैन के रूप में हुई है। जिसने वारदात को अंजाम दिया उसका नाम रवि चौहान बताया जा रहा है। नवी ड्राइवर था और रवि सत्तू की दुकान चलाता था। रवि ने नवी की छाती पर बैठकर बीच सड़क उसकी गर्दन काटी। इसका वीडियो भी सामने आया है। वारदात के बाद रवि 5 मिनट तक हाथ में चाकू लिए वहीं खड़ा रहा। घटना के बाद गुस्साए लोगों ने आरोपी को भी पीट-पीटकर अधमरा कर दिया। अस्पताल में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

क्या 48 घंटे में ही टूट जाएगा सीजफायर

● ट्रम्प बोले- समझौते तक ईरान के आसपास आर्मी तैनात रहेगी ● नेतन्याहू अब ट्रम्प की भी नहीं सुन रहे, लेबनान में बरपा इजरायल का कहर

अमेरिका ने सीजफायर की 3 शर्तें तोड़ीं,अब बातचीत बेकार : ईरान

तेल अवीव/तेहरान/वॉशिंगटन डीसी (एजेंसी)। ईरान ने अमेरिका पर सीजफायर की तीन अहम शर्तें तोड़ने का आरोप लगाया है। ईरानी संसद के स्पीकर मोहम्मद बाकेर गालिबाफ ने कहा कि अमेरिका ने 10-पॉइंट प्रस्ताव की बुनियादी शर्तों का उल्लंघन किया है। ईरान ने कहा कलेबनान में हमले जारी रहते हुए सीजफायर की बात मंजूर नहीं है। ऐसा लग रहा है कि नेतन्याहू अब ट्रम्प की भी नहीं सुन रहे और लेबनान में कहर बरपा रहे हैं। ईरान ने साफ कहा है कि जिस आधार पर बातचीत होनी थी, वही पहले ही टूट चुका है। ऐसे में अब बातचीत या सीजफायर तर्कसंगत नहीं रह गया है। वहीं,

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि जब तक ईरान के साथ हुआ समझौता पूरी तरह लागू नहीं होता, तब तक अमेरिकी सेना ईरान के आसपास तैनात रहेगी।

15,400 टन एलपीजी लेकर भारत पहुंचा जहाज ग्रीन आशा

भारतीय झंडे वाला एलपीजी टैंकर 'ग्रीन आशा' 15,400 टन गैस लेकर भारत पहुंचा है। होर्मुज स्ट्रेट पार कर यह जहाज गुरुवार को नवी मुंबई के जेएनपी (जवाहरलाल नेहरू पोर्ट) पर डॉक किया।

● **ईरान ने होर्मुज पर कहा धमाके से बचने के लिए हमसे बात करें, प्रति बैरल 1 डॉलर टोल लगेगा-** ईरान के इस्लामिक रेवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स ने होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने वाले जहाजों के लिए नया मैप जारी किया है। इसका मकसद जहाजों को समुद्र में बिछी बारूदी सुरंगों से बचाना है। इस मैप में उन खतरनाक इलाकों को दिखाया गया है, जहां जहाजों का जाना मना है। रिपोर्ट के मुताबिक, पहले जहाज ओमान के किनारे के पास से गुजरते थे, लेकिन अब उन्हें ईरान के किनारे के पास से निकलने की सलाह दी गई है। इससे माइन वाले इलाकों से बचा जा सकता है। ईरान ने जहाजों से कहा है कि वे पहले उसके अधिकारियों से संपर्क करें, तभी उन्हें सुरक्षित रास्ता बताया जाएगा। ईरान हर बैरल तेल पर 1 डॉलर टैक्स लेने की तैयारी कर रहा है और यह पैसा क्रिप्टो करेंसी में लेना चाहता है।

सिक्किम में बर्फबारी-लैंडस्लाइड | फंसे 135 टूरिस्ट को सेना ने बचाया

राजस्थान में अप्रैल में सर्दी, उत्तराखंड-हिमाचल में बर्फ गिरी, देश के 17 राज्यों में आंधी-तूफान का अलर्ट

लखनऊ/शिमला/देहरादून/भोपाल (एजेंसी)। सिक्किम में भारी बर्फबारी के बीच कई जगह लैंडस्लाइड के कारण सड़क संपर्क टूट गया। लाचेन में करीब 1,000 पर्यटक फंसे हुए हैं और उन्हें जल्द से जल्द बचाने के लिए निरंतर प्रयास जारी हैं। सेना ने कुल 135 फंसे पर्यटकों को बचाया है।

उत्तर भारत में 3 वेस्टर्न डिस्टरबेंस के असर से अप्रैल में भी सर्दी का अहसास हो रहा है। राजस्थान में 20 दिनों से बदले मौसम के कारण तापमान 7 डिग्री तक कम हुआ है।मौसम विभाग ने छत्तीसगढ़ और बिहार समेत 17 राज्यों में आंधी-तूफान का अलर्ट जारी किया है। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, सिक्किम, बंगाल, अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा में बारिश का ऑरेंज अलर्ट है।

बिहार में काल बैसाखी सिस्टम एक्टिव हो गया है। काल बैसाखी अचानक आने वाला तेज आंधी-तूफान होता है। यह अप्रैल-मई (वैशाख) में आता है। इसके एक्टिव होने पर 50-100 किमी की रफ्तार से हवाएं चलती हैं, बारिश और ओले गिरते हैं।

गुरुग्राम में हड़ताली कर्मचारियों पर लाठीचार्ज

● एक का सिर फूटा-20 घायल, पुलिस की बाइक फूंकी-गाड़ी तोड़ी; सैलरी बढ़ाने के नोटिस लगे

गुरुग्राम (एजेंसी)। गुरुग्राम के मानेसर में हड़ताली कर्मचारियों पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया। एक कर्मचारी का सिर फूट गया। गुस्साए लोगों ने पुलिस की बाइक फूंक दी। कंपनियों ने वेतन बढ़ाने के नोटिस लगाए।

हरियाणा के गुरुग्राम स्थित मानेसर में धारा 163 लागू होने के बावजूद वीरवार को हजारों की संख्या में हड़ताली कर्मचारी जुट गए। जिन्हें खदेड़ने के लिए पुलिस लाठीचार्ज किया। जिससे मामला भगदड़ की स्थिति बन गई।

भोपाल में शराब दुकान हटाने मंत्री-विधायक भी अड़े

सेमराकलां-मंदाकिनी चौराहे के ठेके शिफ्ट होंगे; नई जगह तलाश रहे

भोपाल (नप्र)। भोपाल में 5 शराब दुकानों की शिफ्टिंग का मामला तूल पकड़ रहा है। इन्हें हटाने के लिए हर रोज प्रदर्शन हो रहे हैं। मंत्री विश्वास सारंग और विधायक रामेश्वर शर्मा भी 2 दुकानें हटाने पर अड़े हैं। उन्होंने कलेक्टर और आबकारी अफसरों से बात भी की। ऐसे में सेमराकलां और मंदाकिनी चौराहे के ठेके जल्द ही नई जगह पर शिफ्ट हो सकते हैं। इसके लिए नई जगह भी तलाशी जा रही है।

सेमराकलां की शराब दुकान को हटाने के लिए लोग पिछले सवा साल से प्रदर्शन कर रहे हैं। वे हर मंगलवार को होने वाली जनसुनवाई में 54 बार शिकायत कर चुके हैं। हाल ही में नया ठेका हुआ, लेकिन दुकान नहीं हटी तो लोग भजन-कीर्तन कर रहे हैं। विरोध जता रहे जीतू मरेठिया ने बताया कि दुकान की शिफ्टिंग को लेकर मंत्री सारंग ने आबकारी अधिकारी से बात की है। नई जगह तलाशने के बाद दुकान हटाने का आश्वासन है। हालांकि, दुकान हटने से भजन-कीर्तन कर प्रदर्शन करते रहेंगे।

गुरुवार को भी कई महिलाएं दुकान के सामने ही भजन-कीर्तन करती हुई नजर आई। सुरक्षा के लिहाज से यहां पुलिसकर्मी तैनात किए गए हैं।

प्रदर्शन के बाद मंदाकिनी चौराहे की दुकान भी हटेगी- कोलार रोड स्थित मंदाकिनी चौराहे पर कुछ दिन पहले ही शराब की दुकान

शिफ्ट हुई है। तभी से विरोध प्रदर्शन हो रहा है। जिस जगह दुकान है। वहां पर चौराहा है। ऐसे में हर रोज ट्रैफिक जाम हो रहा है। पीछे जैन मंदिर और रहवासी इलाका भी है। इस वजह से कांग्रेसी लगातार प्रदर्शन कर रहे हैं।

दूसरी ओर, विधायक शर्मा ने भी इस शराब दुकान को लेकर विरोध जताया है। उन्होंने दुकान हटाने के लिए की कलेक्टर से बात की है। विधायक ने इसे लेकर सोशल मीडिया पर लिखा कि शराब दुकान को लेकर बड़ी संख्या में माताओं-बहनों ने विरोध प्रदर्शन किया है। निश्चित रूप से यह स्थान घनी आबादी एवं मंदिर के समीप है। ऐसे में यहां शराब की दुकान का संचालन स्वीकार्य नहीं किया जा सकता है। मैंने कलेक्टर को अवगत कराया है, यह दुकान यहां संचालित नहीं की जाए, ऐसा आग्रह किया है।

हर साल विरोध, अफसर बोले-नियमों की वजह से नहीं हटाई- बता दें कि भोपाल में हर साल शराब दुकानों की शिफ्टिंग का मामला सुर्खियों में रहता है। अरेरा कॉलोनी की शराब दुकान का मामला तो राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग तक जा चुका है। बावजूद दुकान नहीं हटाई जा सकी है।

इस दुकान के 50 मीटर दूर ही आर्य समाज का मंदिर भी है, लेकिन आबकारी विभाग ने नियमों का हवाला देते हुए आर्य समाज मंदिर को मंदिर मानने से ही इनकार किया था। इसके बाद मानवाधिकार आयोग के सदस्य प्रियंक कानूनगो ने नाराजगी भी जताई थी।

इन दुकानों को लेकर भी प्रदर्शन का दौर

बुधवार को पॉलीटेक्निक चौराहे पर बड़ा प्रदर्शन हो चुका है। प्रोफेसर कॉलोनी के पिछले हिस्से में और मुख्य रोड से सिर्फ 10 फीट की दूरी पर ही दुकान है। आसपास स्कूल-कॉलेज भी है, जबकि चौराहे से मुख्यमंत्री, मंत्री समेत तमाम वीआईपी गुजरते हैं।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पदाधिकारी-कार्यकर्ताओं ने दुकान हटाने को लेकर जमकर हंगामा किया था। बोर्ड तोड़ दिए थे। वहीं, फ्लैक्स और बैनर भी हटाए थे। पुलिस को आकर मामले को शांत करना पड़ा था। अवधपुरी इलाके के ऋषिपुरम् में 80 फीट रोड स्थित पेट्रोल पंप के पास संचालित शराब दुकान को हटाने की मांग भी पिछले पांच दिन से की जा रही है। यहां सुंदरकांड का पाठ भी किया जा रहा है। स्थानीय रहवासियों का कहना है कि दुकान के कारण इलाके का माहौल बिगड़ रहा है और आए दिन आपराधिक घटनाएं बढ़ रही हैं। कमलेश सोलंकी ने बताया कि मोहल्ले के लोग लंबे समय से इस दुकान को हटाने की मांग कर रहे हैं। शराब दुकान के आसपास असामाजिक तत्वों का जमावड़ा लगा रहता है, जिससे क्षेत्र में असुरक्षा का माहौल बन गया है।

कई बार यहां से गुजरने वाली महिलाओं के साथ छेड़छाड़ की घटनाएं सामने आई हैं। इसके अलावा झगड़े और अन्य अपराध भी बढ़ गए हैं। जिससे आम लोगों का रहना मुश्किल हो गया है।

ईंटखेड़ी की शराब दुकान को लेकर भी लोग नाराज हैं। उन्होंने पुलिस से भी शिकायत की है। ताकि, ठेका शिफ्ट हो सके।

नवागत जनपद सीईओ एवं विकास खंड अधिकारियों के अभिमुखीकरण प्रशिक्षण का हुआ समापन

मंत्री श्री पटेल ने नवनियुक्त अधिकारियों से किया संवाद, लक्ष्य आधारित कार्यशैली पर दिया जोर

भोपाल (नप्र)। भोपाल स्थित मध्यप्रदेश जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान में नवागत मुख्य कार्यपालन अधिकारी (जनपद पंचायत) एवं विकास खंड अधिकारियों के अभिमुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज समापन समारोह हुआ। इस अवसर पर पंचायत एवं ग्रामीण विकास एवं श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंत्री श्री पटेल ने नवनियुक्त अधिकारियों से सीधा संवाद करते हुए कहा कि आगामी 3 वर्षों में ऐसा कार्य करें जिससे उन्हें स्वयं संतुष्टि प्राप्त हो। उन्होंने कहा कि आपकी आत्मसंतुष्टि ही इस बात का प्रमाण होगी कि आप आमजन के जीवन में कितना सकारात्मक परिवर्तन लाये है। मंत्री श्री पटेल ने अधिकारियों से उनके कार्य क्षेत्र, भविष्य की योजनाओं एवं चुनौतियों पर चर्चा की तथा उन्हें निरंतर संवाद बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि संवाद बेहतर कार्य करने की प्रेरणा देता है और इससे प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता एवं प्रभावशीलता आती है।

उन्होंने आगे कहा कि कई बार हम यह सोचते हैं कि हम सभी कार्य कर सकते हैं, जो सकारात्मक सोच है, लेकिन अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार कार्य करने से बेहतर परिणाम प्राप्त होते हैं। हर कार्य को एक स्पष्ट लक्ष्य, सुदृढ़ योजना और टीम वर्क के साथ किया जाए तो सफलता सुनिश्चित होती है।

इस अवसर पर नव नियुक्त अधिकारियों ने प्रशिक्षण अवधि के दौरान प्राप्त अपने अनुभवों को साझा किया। अधिकारियों ने बताया कि विगत 45 दिनों से संचालित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम ने उन्हें प्रशासनिक कार्य प्रणाली को समझने, विभिन्न क्षेत्रों का अवलोकन करने तथा जमीनी स्तर पर कार्य करने के व्यावहारिक पहलुओं को जानने का अवसर प्रदान किया। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें विभिन्न स्थानों का भ्रमण करने का अवसर मिला, जिससे उन्होंने आने वाली चुनौतियों को समझते हुए अपने कार्य की रूपरेखा पर भी चर्चा की।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर मंत्री श्री पटेल द्वारा सभी नवनियुक्त अधिकारियों को सम्मानित भी किया गया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी गई।

जल गंगा संवर्धन अभियान 2026

खरगोन जिले के कसरावद ब्लॉक ने प्रदेश में प्राप्त किया प्रथम स्थान

भोपाल (नप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान के क्रियान्वयन में खरगोन जिले के कसरावद विकासखंड ने उत्कृष्ट एवं प्रभावी क्रियान्वयन कर प्रदेश में प्रथम स्थान हासिल किया है। प्रदेश में खरगौन जिले को भी जल संरक्षण में किये गये विशिष्ट कार्यों के लिये तीसरा स्थान मिला है। प्रदेश में बारिश के पानी की प्रत्येक बूंद को बचाने और पुराने जल स्त्रोतों को नया जीवन देने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। 19 मार्च से शुरू हुए अभियान अंतर्गत पूरे प्रदेश में मनरेगा के अंतर्गत खेत तालाब, अमृत सरोवर, कूप रिचार्ज पिट जैसे कार्य किए जा रहे हैं। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत खरगोन जिले ने जल संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। प्रदेश स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त किया है।

कसरावद विकासखंड ने 7.01 स्कोर अर्जित कर राज्य स्तर पर शीर्ष स्थान प्राप्त किया। अभियान के अंतर्गत ब्लॉक में 1,236 लक्षित कार्यों के विरुद्ध 855 कार्य पूर्ण किए गए। कुल 24.10 करोड़ की स्वीकृत राशि में से 20.76 करोड़ (86.1 प्रतिशत) की प्रभावी व्यय-बुकिंग दर्ज की गई, जो वित्तीय प्रबंधन एवं कार्य निष्पादन की उत्कृष्टता को दर्शाती है।

खरगोन कलेक्टर श्रीमती भव्या मित्तल ने बताया कि अभियान के दौरान फार्म पोंड, अमृत सरोवर, डग वेल रिचार्ज, जल संरक्षण एवं रिचार्ज, वाटरशेड तथा मरम्मत-रखरखाव जैसे कार्यों में उल्लेखनीय प्रगति हुई। अमृत सरोवर, वाटरशेड एवं मरम्मत कार्यों में 100 प्रतिशत उपलब्धि, फार्म पोंड में 90 प्रतिशत से अधिक तथा डग वेल रिचार्ज में लगभग 86 प्रतिशत प्रगति दर्ज की गई।

मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के शौर्य दिवस की दीं शुभकामनाएं

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अदम्य साहस, अटूट संकल्प और अद्वितीय राष्ट्र भक्ति के प्रतीक हमारे केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के शौर्य दिवस की शुभकामनाएं दीं हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वीर जवानों के शौर्य को प्रणाम कर कहा कि बल के जवानों का साहस, त्याग और समर्पण देश की सुरक्षा का सशक्त आधार है।

मुख्यमंत्री ने गुरु अर्जन देव जी के प्रकाश पर्व की दीं शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सिख धर्म के पांचवें गुरु, गुरु अर्जन देव जी के पावन प्रकाश पर्व की शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गुरु श्री अर्जन देव जी की त्याग, सेवा, समर्पण और सहिष्णुता के प्रति आपकी प्रेरणा, संपूर्ण विश्व के कल्याण का स्रोत है। मानवता, भाईचारे और सत्य के मार्ग पर चलने का संदेश समाज को नई दिशा देता है।

दिनदहाड़े फायर करने वाला गिरफ्तार, पहले से वांटेड

स्कूटी सवार दंपति पर दबाव बनाने किया था फायर, मामूली विवाद के बाद की थी वारदात

भोपाल (नप्र)। ऐशबाग के बाग उमराव दूल्हा में दिनदहाड़े फायरिंग करने वाले बदमाश दिलावर खान ने नकली पिस्टल से फायर किया था। यह पिस्टल सिर्फ आग निकालने के साथ धुंआ फैलाती है। वह लोगों को धमकाने के लिए अपने पास नकली पिस्टल रखता था। मंगलवारा पुलिस ने उसे पकड़ लिया है, क्योंकि वह एक आपराधिक मामले में पहले से ही फरार चल रहा था। पुलिस के मुताबिक, बुधवार दोपहर बरखेड़ी निवासी एक महिला गमी में जा रही थी। यूटर्न लेते समय उसकी एक्टिवा बाइक से टकराने से बची, इसी बात पर बाइक सवार युवक बहस करने लगा। कुछ देर बाद वह बाइक से उतरा और कमर से पिस्टल निकाल ली।

पिस्टल निकलता देख आरोपी से भिड़ गई थी महिला- यह देख महिला उससे भिड़ गई और उसे फायर करने से रोकने का प्रयास करती रही। बाद में आरोपी हवाई फायर कर भाग गया था।। इस मामले में भी सीसीटीवी फुटेज सामने आने के बाद आरोपी दिलावर के खिलाफ केस दर्ज कर लिया था। गुरुवार सुबह मंगलवारा पुलिस ने आरोपी दिलावर को पकड़ लिया।

आरोपी बोला नकली पिस्तौल से चलाई गोली

पुलिस पूछताछ में आरोपी युवक ने बताया कि उसने नकली पिस्टल से फायर किया था। जिसे पुलिस ने जब्त कर लिया है। आरोपी युवक मंगलवारा थाना इलाके में हुए एक आपराधिक मामले में 2025 से फरार चल रहा था। इस मामले में पुलिस ने आरोपी युवक की गिरफ्तारी की है।

'चिताओं' पर लेटे बुंदेलखंड के आदिवासी, सीमाएं सील

केन-बेतवा परियोजना का विरोध, आंदोलनकारी बोले-दिल्ली जाने से रोका, रास्ते-राशन बंद किया

छतरपुर (नप्र)। छतरपुर में केन-बेतवा लिंक परियोजना के विरोध का आंदोलन निर्णायक मोड़ पर पहुंच गया है। प्रशासन के दबाव के बावजूद बुधवार दोपहर से बड़ी संख्या में आदिवासी किसान, खासकर महिलाएं, 'चिता आंदोलन' के जरिए विरोध कर रही हैं। आंदोलन का नेतृत्व कर रहीं आदिवासी महिलाएं और जय किसान संगठन के नेता अमित भटनागर ने सरकार के खिलाफ आक्रामक रुख अपनाया है। महिलाएं छोटे बच्चों के साथ प्रतीकात्मक चिताओं पर लेटकर विरोध कर रही हैं। उनकी मांग है कि या तो उन्हें न्याय दिया जाए या मौत।

आंदोलनकारियों का आरोप है कि उन्हें दिल्ली जाने से रोका गया। रास्तों में अवरोध लगाए गए और राशन-पानी तक रोक दिया गया। उन्हें धमकियां भी दी गईं। अब प्रशासन गांव-जंगल में धारा 163 लगाकर उनकी आवाज दबाने की कोशिश कर रहा है, जिसे उन्होंने दमन की पराकाष्ठा बताया है।

प्रशासन ने धारा 163 लागू कर पन्ना और छतरपुर की सीमाओं पर बाहरी लोगों की आवाजाही रोक दी है। इस पर नेता अमित भटनागर ने कड़ी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि एक ही परियोजना में लोगों को बांटना अन्यायपूर्ण और अतार्किक है। उन्होंने प्रशासन पर अत्याचार और भ्रष्टाचार छिपाने के लिए ऐसे आदेश जारी करने का आरोप लगाया। धारा 163 के बावजूद आंदोलनकारियों ने अनूठा तरीका अपनाया। केन नदी के बीच आंदोलन शुरू किया गया।

नागपुर में रेलवे ब्लॉक, 2 ट्रेनें पूरी तरह रद्द

4 आंशिक रूप से निरस्त, 20 दिन तक अलग-अलग तारीखों में कैंसिल

भोपाल (नप्र)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के नागपुर मंडल में गोंदिया स्टेशन पर प्रस्तावित तकनीकी कार्य के चलते भोपाल मंडल होकर गुजरने वाली कई महत्वपूर्ण ट्रेनें प्रभावित रहेंगी। स्टेशन की लाइन नंबर-05 पर वॉशेबल एप्रन को हटाकर बैलेस्टेड ट्रैक में बदलने का कार्य किया जाएगा, जिसके लिए 20 दिनों तक यातायात ब्लॉक किया गया है।

इस दौरान 5 अप्रैल से 24 अप्रैल 2026 तक तीन जोड़ी ट्रेनों का संचालन प्रभावित रहेगा। रेलवे ने यात्रियों से यात्रा से पहले ट्रेन की स्थिति की जानकारी लेने की अपील की है।

गोंदिया स्टेशन पर होगा बड़ा ट्रैक कार्य- रेलवे प्रशासन के अनुसार गोंदिया स्टेशन के प्लेटफॉर्म-3 से जुड़ी लाइन नंबर-05 (मेन लाइन) पर वॉशेबल एप्रन को डिस्मेंटल कर बैलेस्टेड ट्रैक में बदला जाएगा। यह कार्य संरक्षा और ट्रेनों की गति बढ़ाने के उद्देश्य से किया जा रहा है। कार्य के चलते 20 दिनों तक इस लाइन पर आवागमन पूरी तरह बंद रहेगा, जिसका सीधा असर भोपाल मंडल से गुजरने वाली ट्रेनों पर पड़ेगा।

ये ट्रेनें रहेंगी पूरी तरह निरस्त

गाड़ी संख्या 18237 कोरबा-अमृतसर एक्सप्रेस - 25 अप्रैल 2026 तक रद्द

गाड़ी संख्या 18238 अमृतसर-बिलासपुर एक्सप्रेस - 27 अप्रैल 2026 तक रद्द

इन ट्रेनों की सेवाएं अलग-अलग तारीखों में रद्द

12410 हजरत निजामुद्दीन-रायगढ़ एक्सप्रेस - 8, 9, 11, 13, 14, 15, 16, 18, 20, 21, 22 अप्रैल

12409 रायगढ़-हज़रत निजामुद्दीन एक्सप्रेस - 8, 9, 10, 11, 13, 15, 16, 17, 18, 20, 22, 23, 24 अप्रैल

12807 विशाखापत्तनम-हज़रत निजामुद्दीन एक्सप्रेस - 8, 9, 11, 12, 14, 15, 16, 18, 19, 21, 22, 23 अप्रैल

12808 हज़रत निजामुद्दीन-विशाखापत्तनम एक्सप्रेस - 9, 10, 11, 13, 14, 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24, 25 अप्रैल

यात्रियों से अपील

रेलवे ने यात्रियों से असुविधा के लिए खेद जताते हुए सहयोग की अपील की है। प्रशासन का कहना है कि यह कार्य भविष्य में बेहतर सुरक्षा, गति और संचालन सुविधा सुनिश्चित करने के लिए किया जा रहा है। यात्रियों को सलाह दी गई है कि यात्रा शुरू करने से पहले अपनी ट्रेन की स्थिति जरूर जांच लें, ताकि किसी प्रकार की परेशानी से बचा जा सके।

108 देशों में एक साथ गूंजा नवकार महामंत्र

जवाहर चौक जैन मंदिर में सामूहिक पाठ; विश्व शांति और मानव कल्याण की कामना

भोपाल (नप्र)। विश्व शांति, मानव कल्याण और सभी के मंगलमय जीवन की कामना के साथ राजधानी में नवकार महामंत्र की स्वर लहरियां गूंज उठीं। इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन जीतो के तत्वावधान में भारत सहित दुनिया के 108 देशों में एक साथ नवकार महामंत्र का पाठ किया गया। भोपाल में यह आयोजन जवाहर चौक स्थित जैन मंदिर परिसर में श्रद्धा और उत्साह के साथ संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में आचार्य विद्यासागर महाराज एवं आचार्य समय सागर महाराज के शिष्य निर्यापक मुनि संभव सागर महाराज के सानिध्य में सामूहिक पाठ हुआ। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर मंत्र जाप किया, जिससे पूरे वातावरण में आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार हुआ।

दिल्ली में अमित शाह रहे मुख्य अतिथि- राजधानी दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह मुख्य अतिथि के

रूप में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि जैन धर्म के सिद्धांतों में क्षमा और नवकार मंत्र विश्व शांति के लिए एक सशक्त आधार हैं। यह अनुष्ठान सार्वभौमिक संदेश देता है।

भोपाल में घर-घर हुआ पाठ- जीतो के अध्यक्ष डॉ. प्रशांत जैन और सचिव वैभव चौधरी ने बताया कि इस आयोजन के तहत भोपाल में भी घर-घर नवकार महामंत्र का पाठ किया गया। इससे समाज में सकारात्मक ऊर्जा और एकता का संदेश गया।

मुनि संभव सागर महाराज ने कहा कि नवकार महामंत्र शाश्वत और अनंत गुणों का धारक है। इसमें पंच परमेष्ठियों का स्मरण कर आत्मशुद्धि और आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है।

जनप्रतिनिधि और समाजजन रहे मौजूद- कार्यक्रम में प्रदेश सरकार के मंत्री विश्वास सारंग, संस्कृति आयुक्त जैन सहित समाज के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इसमें डॉ. प्रशांत जैन, वैभव चौधरी, सुनील जैन, मनोज पारेख, प्रतिभा टोंग्या, पूजा जैन, प्रखर चौधरी, आयुष मोदी और अन्य सदस्य शामिल हुए।

प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया कि जीतो संस्था देश-विदेश में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक कार्यों में सक्रिय भूमिका निभा रही है। यह आयोजन भी उसी कड़ी का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य विश्व शांति और मानवता का कल्याण है।

पार्षद बोलीं-किसी के बाप की नहीं सुनते, वंदे मातरम् नहीं गाएंगे

इंदौर में शहर कांग्रेस अध्यक्ष ने निष्कासन का प्रस्ताव भेजा; भाजपा ने की एफआईआर की तैयारी

इंदौर (नप्र)। इंदौर नगर निगम में बुधवार को बजट चर्चा के दौरान कांग्रेस पार्षद फौजिया शेख अलीम और रुबीना इकबाल ने 'वंदे मातरम्' गाने से इनकार कर दिया। सभापति के निर्देश पर फौजिया ने कहा कि उन्हें वह एक्ट दिखाया जाए, जिसमें 'वंदे मातरम्' गाना अनिवार्य बताया गया है। इससे भाजपा पार्षद भड़क गए। स्थिति संभालने के लिए सभापति मुन्नालाल यादव ने फौजिया को सदन से बाहर जाने के निर्देश दिए। इधर, पार्षद रुबीना इकबाल ने सदन की कार्रवाई समाप्त होने के बाद मीडिया से चर्चा में कहा- दादागीरी तो हम किसी के बाप की नहीं सुनते। भाजपा पार्षदों का कहना है कि इस प्रकरण में एफआईआर

दर्ज कराई जाएगी। वहीं, शहर कांग्रेस ने रुबीना के पार्टी से निष्कासन का प्रस्ताव प्रदेश कमेटी को भेजा है।

हिंदूवादी नेताओं ने पार्षद फौजिया शेख के खिलाफ थाने में दी शिकायत

उधर, पार्षद फौजिया शेख अलीम के खिलाफ एमजी रोड थाने में शिकायत दी गई है। हिंदूवादी नेता- लक्की मेवाती, ऐश्वर्य शर्मा और मानसिंह राजावत अपने साथियों के साथ थाने पहुंचे और एफआईआर दर्ज करने की मांग की। उन्होंने आरोप लगाया कि पार्षद के बयान से उनकी भावनाएं आहत हुई हैं।

भाजपा ने कहा- नोटिस जारी करें, कांग्रेस बोली- आज से रुबीना पार्टी में नहीं

मामले पर भाजपा और कांग्रेस नेताओं के लगातार बयान आ रहे हैं। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने इसे शहीदों का अपमान कहा। मेयर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा कि कांग्रेस पार्टी को पार्षदों को नोटिस जारी करना चाहिए।

मामले पर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी के मीडिया एडवाइजर केके मिश्रा ने भी ट्वीट किया। इसमें शहर अध्यक्ष चिंटू चौकसे से रुबीना खान को पार्टी से बर्खास्त करने को कहा।

इसके बाद चौकसे का बयान सामने आया। उन्होंने मीडिया से बातचीत में कहा- आज से रुबीना इकबाल कांग्रेस पार्टी में नहीं है, आप मान कर चलिए। हमने प्रदेश कमेटी को रुबीना खान के निष्कासन का प्रस्ताव भेजा है। पार्टी को लेकर गलत बात करने वालों की पार्टी में जगह नहीं, इन्हें पार्टी एंटरटेन नहीं करेगी।

ट्रक की टक्कर से एक की मौत एक युवक घायल

शादी के लिए लड़की देखने गए थे, घर लौटते समय हुआ हादसा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के रापड़िया बाईपास पर बाइक सवार दो युवकों को ट्रक ने पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। हादसा बुधवार गुरुवार की दरमियानी रात का है। घटना में एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरे को मामूली चोटे आई है। घटना के समय हादसे में जान गवाने वाला युवक अपने परिजनों के साथ शादी के लिए लड़की देख कर लौट रहा था।

एएसआई अखिलेश कुमार के मुताबिक गेंदालाल आदिवासी (40) लटेरी का रहने वाला था और मजदूरी करता था। वह बुधवार दोपहर रिश्तेदारों के साथ 11 मिल बाईपास पर स्थित एक गांव में शादी के लिए लड़की देखने आया था। देर रात करीब 12:00 बजे लड़की के घर से लटेरी स्थित गांव जाने के लिए रवाना हुआ।

भोपाल के कटारा हिल्स में स्थित रापड़िया बाईपास पर सामान से लदे एक ट्रक ने पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। हादसे के समय गेंदालाल बाइक पर पीछे बैठा था। ट्रक की चपेट में आने के बाद उसका एक हाथ काट कर अलग हो गया जबकि सर और सीना बुरी तरह से कुचल गया इससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। जबकि उसके साथी को मामूली चोटे आई हैं।

कटारा हिल्स पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है। टक्कर मारने वाले ट्रक को कब्जे में लेकर थाने में खड़ा कर लिया गया है। आरोपी चालक को भी हिरासत में ले लिया गया है। गुरुवार दोपहर पीएम के बाद शव परिजनों के हवाले कर दिया गया है।

संपादकीय

मप्र में बेखौफ रेत माफिया

मध्यप्रदेश में बेखौफ रेत माफिया ने एक और सरकारी कर्मचारी की जान ले ली, बावजूद इसके सरकार के माथे पर जूं रेंगती नहीं दिख रही है। कारण साफ है कि रेत माफिया के सामने प्रशासन और सरकार नतमस्तक है, क्योंकि ज्यादार रेत माफिया सत्तारूढ़ दल के लोगों के हैं या फिर उनके संरक्षण में चल रहे हैं। ताजा मामला मुरैना जिले के दिमनी थाना इलाके का है, जहां चंबल नदी में चल रहे हे रेत के अवैध खनन के खिलाफ कार्रवाई करने पहुंची वन विभाग की टीम पर रेत माफिया ने हमला कर दिया।

आरोपी चालक वन रक्षक को ट्रैक्टर से कुचलकर फरार हो गया। ये सनसनीखेज हत्याकांड उस समय हुआ जब वन विभाग का अमला इलाके में गश्त कर रहा था। प्राप्त जानकारी के अनुसार चंबल नदी के ऐसाह घाट से रेत का अवैध खनन और परिवहन किया जा रहा था। सूचना मिलते ही अंबाह रेंज का गश्ती दल सुबह रेत के अवैध परिवहन को रोकने के लिए मौके के लिए रवाना हुआ। रथोल का पुरा और रानपुर के बीच वन आरक्षक हरिकेश गुर्जर ने रेत से भरे ट्रैक्टर ट्राली को रोकने की कोशिश की। चालक ने बेरहमी से हरिकेश गुर्जर को ट्रैक्टर ट्राली से कुचल दिया और वाहन लेकर मौके से फरार हो गया। मृतक हरिकेश गुर्जर मुरैना जिले के सरायछोला थाना इलाके में आने वालेजनकपुर गांव का रहे वाला था। कुछ समय पहले ही वो मध्य प्रदेश के अन्य जिले से स्थानांतरित होकर अंबाह रेंज में पदस्थ हुआ था। फिलहाल, पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। रेत माफिया द्वारा वनकर्मी की हत्या कोई पहली बार नहीं है। मप्र में रेत माफिया एक आईपीएस अधिकारी की जान ले चुका है। बीते एक दशक में कई सरकारी अफसर व कर्मचारी रेत माफिया के हाथों अपनी जानें गंवा चुके हैं, लेकिन रेत माफिया का बाल भी बांका नहीं होता। सरकार की संवदेनहीनता और रेत माफिया से दबने का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है। पिछले साल शहडोल जिले में रेत माफिया ने पुलिस एएसआई महेंद्र बागरी की उसे रोके जाने पर ट्रैक्टर चढ़ा कर हत्या कर दी। इसके पूर्व में मप्र के सीधी जिले में रेत माफिया ने वहां कार्रवाई करने गई, सोन घड़ियाल अभ्यारण टीम पर ही हमला कर तीन से अधिक कर्मचारियों को जख्मी दिया। बाद में उन्होंने जब्त ट्रैक्टर भी छुड़ा लिय। अशोक नगर जिलेमें नायब तहसीलदार मयंक खेमरिया ने जब माफिया को रोकने की कोशिश की तो उन पर जानलेवा हमला कर दिया गया। खेमरिया नयी सराय में नायब तहसीलदार हैं। उन्होंने रेत की अवैध ढुलाई कर रही एक ट्रैक्टर ट्रॉली को रोक कर ट्रॉली की रॉयल्टी मांगी थी। इससे गुस्साए ट्रैक्टर चालक और उसके आदमियों ने मयंक खेमरिया पर जानलेवा हमला कर दिया। इसी तरह शिवपुरी जिले के करेरा में सुनारी चौकी के सड़ गांव में रेत माफिया ने चौकी प्रभारी और आरक्षक पर हमला कर दिया। इसमें दोनों बुरी तरह घायल हो गए। दरअसल रेत माफिया की इस बढ़ती दबंगई के पीछे रेत के कारोबार में भारी मुनाफा है। प्रदेश में 728 रेत खदानें वैध तरीके से चल रही हैं। इनके समानांतर 200 से ज्यादा अवैध रेत खदानें भी चल रही हैं। राज्य में अवैध रेत खनन का कारोबार करीब 2 हजार करोड़ रू. का है। क्योंकि प्रदेश में बढ़ती निर्माण गतिविधियों के चलते रेत की मांग लगातार बढ़ रही है। इस कारोबार में सभी की मिली भगत है। यूं कहने को पिछले साल राज्य में मुख्यमंत्री के निर्देश पर विशेष अभियान चलाकर अवैध खनन के 10 हजार 956 मामले दर्ज हुए, लेकिन किसी को सजा हुई हो, यह देखने में नहीं आया।

प्राकृतिक हिंसा सनातन का उद्देश्य नहीं

नजरिया

राजेन्द्र सिंह

लेखक 'तरूण भारत संघ' के अध्यक्ष एवं 'जल बिरादरी' के राष्ट्रीय समन्वयक हैं।

त्रेतायुग में विद्वान या राजा बनने का भाव आने लगा। प्रकृति के चार पाँवों में से एक पाँव टूटा, तीन पाँव बचे तो 'त्रेता' कहलाया। कुछ लोग विद्वान, ज्ञानदेव बनने लगे और कुछ लोग राजा बने, लेकिन तब भी वे मोह, माया आदि से मुक्त थे। इसलिए विद्वान और राजा भी प्रकृति के साथ जुड़े रहे। जैसे, राजा जनक की घटना - अकाल मुक्ति हेतु अपनी रानी के साथ मिलकर हल चलाना आदि। द्वापरयुग में मथुरा का राजा कंस, आसपास के क्षेत्र को लूटने लगा था। राजा और विद्वानों में धोखेबाज़ी और कलाबाजियों ने जन्म ले लिया था। प्रकृति के दो पैर टूट गये, इसलिए द्वापरयुग कहलाया, लेकिन इस काल में भी कृष्ण जैसा इंसान गोवर्द्धन पर्वत का सहारा लेकर लोगों को बाढ़ से बचा लेता था। वह अतिवृष्टि के कारण आयी बाढ़ से बचाने के लिए गायों सहित सब ग्वालों को लेकर गोवर्द्धन पर्वत पर चला जाता था, जिससे ग्वाल और गायें बाढ़ के प्रकोप से बच जाते थे।

पंचमहाभूतों से निर्मित प्रकृति ही परमात्मा है। भारतीय विज्ञान और अध्यात्म दोनों ने उक्त 'सत्य' को सिद्ध किया था। इस सत्य को जब तक हमने अपने व्यवहार और संस्कार में मानकर जीवन जिया था, तभी तक हमारे पास केवल कुछ लिखने के लिए ही नहीं, परन्तु सीखने और दुनिया को सिखाने लायक था। उस काल-खण्ड में भारत सिखाने वाली भूमि थी, इसीलिए हमने स्वयं को विश्वगुरु मान लिया था। हम थे भी, पर आज नहीं रहे हैं, क्योंकि अब हम भी दुनिया की नकल करने में रुचि रखते हैं।

यहाँ संस्कृति और प्रकृति के योग से ही क्रान्ति, परिवर्तन और विकास की प्रक्रिया चली थी। उसमें भारतीय मानव अपने आप को प्रकृति का अंग मानकर जटिलताओं से मुक्त जीवन का व्यवहार करता था। इसी आवर्तन, परावर्तन को जानकर हमने अपने आप सम्पूर्ण काल-खण्ड को चार भागों में बाँटा था। सत्ययुग में, जब इंसान भी प्रकृति के अन्य अंगों के समान सादगी, सहजता और सरलता का अहिंसक व्यवहार करके जीवन जीता था। उस काल में लोभ, लालच, क्रोध, मोह, महत्वाकांक्षा से मुक्ति थी। तब किसी के भी मन में विद्वान या राजा बनने का भाव नहीं आता था।

त्रेतायुग में विद्वान या राजा बनने का भाव आने लगा। प्रकृति के चार पाँवों में से एक पाँव टूटा, तीन पाँव बचे तो 'त्रेता' कहलाया। कुछ लोग विद्वान, ज्ञानदेव बनने लगे और कुछ लोग राजा बने, लेकिन तब भी वे मोह, माया आदि से मुक्त थे। इसलिए विद्वान और राजा भी प्रकृति के साथ जुड़े रहे। जैसे, राजा जनक की घटना - अकाल मुक्ति हेतु अपनी रानी के साथ मिलकर हल चलाना आदि।

द्वापरयुग में मथुरा का राजा कंस, आसपास के क्षेत्र को लूटने लगा था। राजा और विद्वानों में धोखेबाज़ी और कलाबाजियों ने जन्म ले लिया था। प्रकृति के दो पैर टूट गये, इसलिए द्वापरयुग कहलाया, लेकिन इस काल में भी कृष्ण जैसा इंसान गोवर्द्धन पर्वत का सहारा लेकर लोगों को बाढ़ से बचा लेता था। वह अतिवृष्टि के कारण आयी बाढ़ से बचाने के लिए गायों सहित सब ग्वालों को लेकर गोवर्द्धन पर्वत पर चला जाता था, जिससे ग्वाल और गायें बाढ़ के प्रकोप से बच जाते थे।

उस काल में भी प्राकृतिक आपदा का समाधान प्रकृति में ही खोजा जाता था। पहाड़ आपदा में सहारा थे। ये ही जलवायु के मददगार बनते थे। द्वापर में कंस भी जब तक सोना निकालने हेतु पहाड़ों को नहीं काट रहा था, तब तक प्रकृति के लुटेरों ने भी इसे ही जीवन का सहारा माना था।

कलियुग आज का युग है, जिसमें आपदा का समाधान भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता में ही खोजा जाने लगा है। यह हमें प्रकृति और परमात्मा दोनों से दूर कर रहा है। प्रकृति से दूर होने के कारण अब प्रकृति के तीन पैर टूट चुके हैं। अब प्रकृति नहीं, कलाओं और कल (मशीन) का युग है। इसीलिए इसे कलयुग कहते हैं, पर इस कलियुग में भी अभी कुछ सम्भावनाएँ शेष हैं। इसलिए हम अपने मूल ज्ञान की तरफ लौटें और प्रकृति व संस्कृति के योग वाले भू-सांस्कृतिक मानचित्र के अनुरूप क्रान्ति, परिवर्तन और विकास की रूपरेखा तैयार करके, कार्य-योजना बनाकर काम करने की तैयारी करें।

इसमें सृष्टि के निर्माता पंचमहाभूत - भूमि, गगन, वायु, अग्नि और नीर ही भगवान् हैं। नीर -'जल', जिसे हम 'ब्रह्म' भी मानते हैं, वही ब्रह्माण्ड का सृजन करने वाला है। उसे केन्द्र में रखकर पुनः अपने विस्थापन, बिगाड़, विनाशमुक्त-विकास की योजना बनाकर विकास का रास्ता पकड़ें। कलयुग में भी जटिलताओं से मुक्त होकर सहज, सरल, सादगी से समता और आनन्द भाव सबके जीवन में प्राप्त होगा। यह सनातन विकास ही सतयुग की तरफ ले जायेगा।

पंचमहाभूत (भ-भूमि, ग-गगन, व-वायु, अ-अग्नि और न-नीर) ही भगवान् हैं। यही परमात्मा, नारायण सब कुछ हैं। इसी के साथ हम अपने शरीर और आत्मा को जोड़कर देखें और जियें, तो कलयुग भी सतयुग बन जायेगा, हमारा जीवन आज भी जटिलता मुक्त बन जायेगा। हमारा 'कृत' प्रकृतिमय बनकर सतयुग पुनः स्थापित कर सकता है। बस! प्रकृति को परमात्मा 'सत्य' मानकर अहिंसामय जीवन जीना शुरू करें।

पंचमहाभूतों में जल 3.6 खरब वर्ष पहले एक महाविस्फोट में आग के गोले से ऑक्सीजन और हाइड्रोजन के रूप में छिटककर अलग होने से तथा पुनः इन्हीं तत्वों के मिलने से 'जल' बना था। जल से ही धीरे-धीरे जीव बना और यही जीव मिट्टी बनाने लगा। फिर मिट्टी और जल के योग से भूमि व जलीय जीव-जन्तु, जलीय वनस्पति तथा अन्य जीव जन्म लेने लगे थे। जब भूमि, पहाड़, नदी आदि बनने शुरू हुए तो इन जीव-जन्तु, वनस्पतियों को चलाने हेतु ऊर्जा वायु बनकर जीवन देने और जीवन को चलाने लगी। सूर्य तो ऊर्जा का साधन पहले ही था। गगन में वायु भी बन ही गयी थी।

प्रकृति के इसी विस्तार को जानकर प्राचीन भारतीयों ने इसे ही अपने अध्यात्म और विज्ञान का आधार मानकर पंचमहाभूतों को परमात्मा मान लिया था। वे इन पंचमहाभूतों को ही अपना भगवान, नारायण, ब्रह्म मानकर इन्हीं शब्दों द्वारा इसका सम्मान करने लगे थे। यह प्रत्यक्ष सत्य सिद्ध है। हमारे प्राणरूपी जीवन को चलाने वाली ऊर्जा 'वायु' को प्राण (आत्मा) मान लिया था। श्वाँस ही तो प्राण है। आयुर्वेद में आरोग्य रक्षण हेतु स्वस्थ श्वाँस को जीवन के लिए जरूरी बताया गया है। वायु ही आत्मा है। इसी 'सत्य' ने हमें सनातनी बना दिया। क्योंकि वायु कभी मरती ही नहीं, नष्ट भी नहीं होती, चलती ही रहती है। यही 'सनातन' है। इसका आरम्भ और अन्त नहीं है। यह सत्य हम भारतीय स्वीकारते हैं।

सभी धर्म इस 'सत्य' को हमारी तरह नहीं स्वीकारते। जो भारतीय स्वीकारते हैं, वे भी आज इस सत्य को अपने व्यवहार में जीते नहीं हैं। वे भी अपने को 'सनातनी' कहने का भी गौरव जरूर प्राप्त कर लेते हैं। मैं सनातनी हूँ, सनातन को जीता हूँ, प्राकृतिक हिंसा नहीं करता, नदियों को पुनर्जीवित करता हूँ। पहाड़ों को काटता नहीं हूँ। पहाड़ हमारी धरती माँ के स्तन हैं। इन्हें काटने से रुकवाने हेतु तथा अरावली में खनन को रोकने हेतु जीवन-भर संघर्ष और 'सत्याग्रह' करता रहा हूँ, अभी भी कर रहा हूँ। मेरा सनातन तो 'जय जगत' है, यही कहता हूँ और यही जीता हूँ। (सप्रेस)

लोकतंत्र में आधी आबादी की हिस्सेदारी

मुद्दा

ममता कुशवाहा

लेखक शिक्षक हैं।

किसी भी जीवंत लोकतंत्र में प्रतिनिधित्व केवल संख्या का खेल नहीं होता, बल्कि यह न्याय, समानता और समाज की सामूहिक आवाज़ का प्रतिबिंब होता है। भारत, जिसे विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र कहा जाता है, ने स्वतंत्रता के बाद राजनीतिक भागीदारी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। लेकिन जब बात संसद और विधानसभाओं में महिलाओं की भागीदारी की आती है, तो यह प्रगति असमान और कई बार निराशाजनक रूप से धीमी दिखाई देती है। जबकि महिलाएँ देश की लगभग आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं, फिर भी उनकी उपस्थिति राजनीतिक संस्थाओं में अत्यंत कम है। ऐसे में महिलाओं के लिए आरक्षण की लंबे समय से चली आ रही मांग केवल एक राजनीतिक सुधार नहीं, बल्कि एक नैतिक आवश्यकता बन जाती है।

साल 2023 में महिला आरक्षण अधिनियम का पारित होना भारत के संवैधानिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इस कानून के माध्यम से लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक-तिहाई सीटों का आरक्षण सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है। यह कदम दशकों से चली आ रही उस संरचनात्मक असमानता को स्वीकार करता है, जिसने महिलाओं को राजनीति में उचित स्थान नहीं मिलने दिया। हालांकि, असली चुनौती इस कानून को पारित करने में नहीं, बल्कि इसे समय पर और प्रभावी ढंग से लागू करने में है। वर्तमान व्यवस्था के अनुसार, इस आरक्षण को अगली जनगणना और उसके बाद होने वाले परिसीमन से जोड़ा गया है, जो 2026 के बाद ही संभव है। इस शर्त के कारण यह आशंका पैदा होती है कि इस कानून का लाभ कई वर्षों तक टल सकता है। यहीं पर सबसे बड़ा प्रश्न खड़ा होता है कि आखिर महिलाओं को समान प्रतिनिधित्व के लिए और कितने समय तक प्रतीक्षा करनी चाहिए? भारत ने अपनी लोकतांत्रिक यात्रा की शुरुआत में ही दूरदर्शिता दिखाते हुए महिलाओं को पुरुषों के समान मतदान का अधिकार दिया था। यह विश्व के सामने एक आदर्श उदाहरण था। लेकिन लोकतंत्र केवल मतदान तक सीमित नहीं है; इसमें निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी भी आवश्यक है। शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान और उद्यमिता जैसे अनेक क्षेत्रों में महिलाओं ने अपनी क्षमता का लोहा मनवाया है, लेकिन राजनीति में उनकी कम भागीदारी यह दर्शाती है कि सामाजिक और संरचनात्मक बाधाएँ अब भी मौजूद हैं। आंकड़े इस असमानता को और स्पष्ट करते हैं। वर्तमान में लोकसभा में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 14 प्रतिशत के आसपास है, जबकि कई राज्य विधानसभाओं में यह प्रतिशत इससे भी कम है। यह कमी महिलाओं की योग्यता या इच्छा की कमी के कारण नहीं, बल्कि पितृसत्तात्मक सोच, संसाधनों की सीमित उपलब्धता और पुरुष-प्रधान राजनीतिक ढांचे के कारण है। ऐसे में आरक्षण एक आवश्यक सुधार के रूप में सामने आता है, जो इस असंतुलन को दूर करने का प्रयास करता है।

हालांकि, इस आरक्षण को लागू करने की प्रक्रिया कई तकनीकी और संवैधानिक जटिलताओं में उलझी हुई है, जिनमें सबसे प्रमुख है परिसीमन का मुद्दा। परिसीमन का अर्थ है जनसंख्या के आधार पर निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं का पुनर्निर्धारण, ताकि प्रतिनिधित्व संतुलित रहे। यह एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, लेकिन इसे महिला आरक्षण से जोड़ना एक अनावश्यक बाधा बन गया है। चूंकि परिसीमन एक लंबी और जटिल प्रक्रिया है, जिसमें समय और राजनीतिक सहमति दोनों की आवश्यकता होती है, इसलिए इसके पूरा होने तक इंतजार करना महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण को टालने जैसा है।

इस स्थिति से निकलने के लिए हमें प्रतिनिधित्व की अवधारणा को नए सिरे से समझने की आवश्यकता है। यदि आरक्षण को केवल भौगोलिक निर्वाचन क्षेत्रों तक सीमित न रखा जाए, तो एक मिश्रित प्रणाली अपनाई जा सकती है, जिसमें प्रत्यक्ष चुनाव और अनुपातिक प्रतिनिधित्व दोनों का समावेश हो। इस व्यवस्था में अतिरिक्त सीटें बनाई जा सकती हैं और उन्हें राजनीतिक दलों को उनके वोट प्रतिशत के आधार पर आवंटित किया जा सकता है, इस शर्त के साथ कि इन सीटों पर महिलाएँ ही उम्मीदवार हों। यह तरीका न केवल परिसीमन की आवश्यकता को टाल सकता है, बल्कि अधिक न्यायसंगत प्रतिनिधित्व भी सुनिश्चित कर सकता है।

इस व्यवस्था का एक और महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह जनता के जनादेश का सम्मान करता है। जब सीटों का आवंटन वोट प्रतिशत के आधार पर होगा, तो यह सुनिश्चित होगा कि प्रतिनिधित्व वास्तव में जनता की इच्छा को दर्शाता है। इससे राजनीतिक दलों को महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरणा मिलेगी और धीरे-धीरे राजनीतिक संस्कृति में समावेशिता बढ़ेगी। हालांकि, कुछ आलोचक यह तर्क दे सकते हैं कि इस तरह की व्यवस्था चुनाव प्रणाली को जटिल बना सकती है या प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व के सिद्धांत को कमजोर कर सकती है। लेकिन विश्व के कई देशों में ऐसी मिश्रित चुनाव प्रणालियाँ सफलतापूर्वक लागू हैं, जो समावेशिता और निष्पक्षता दोनों को बढ़ावा देती हैं। भारत जैसे विविध और विशाल देश में, जहां चुनौतियाँ भी जटिल हैं, वहां ऐसे नवाचारी उपाय आवश्यक हो जाते हैं। तकनीकी पहलुओं से आगे बढ़कर, हमें महिला आरक्षण के व्यापक प्रभाव को भी समझना चाहिए। जब अधिक महिलाएँ संसद और विधानसभाओं में होंगी, तो नीति निर्माण में भी बदलाव आएगा। शोध बताते हैं कि महिलाएँ अक्सर अधिक संवेदनशील और समावेशी दृष्टिकोण अपनाती हैं। स्वास्थ्य, शिक्षा, लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों को अधिक प्राथमिकता मिलती है, जिससे समाज के कमजोर वर्गों को भी लाभ होता है।इसके अलावा, नेतृत्व के पदों पर महिलाओं की उपस्थिति एक मजबूत सामाजिक संदेश भी देती है। यह पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देती है और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती है कि वे भी सार्वजनिक जीवन में अपनी भूमिका निभाएँ। ऐसे समाज में, जहाँ अभी भी लैंगिक असमानताएँ विभिन्न रूपों में मौजूद हैं, राजनीतिक प्रतिनिधित्व सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम बन सकता है।

महिला आरक्षण को लागू करने में देरी अब किसी भी दृष्टि से उचित नहीं ठहराई जा सकती। प्रक्रिया संबंधी कारणों का हवाला देकर इसे टालना इस सुधार की भावना के साथ अन्याय होगा। जिस राजनीतिक इच्छाशक्ति ने इस कानून को पारित कराया, वही अब इसके कार्यान्वयन में भी दिखाई देनी चाहिए। विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच सहमति बनाना आवश्यक है, लेकिन यह सहमति कार्य को आगे बढ़ाने का माध्यम होनी चाहिए, न कि उसे रोकने का बहाना।

यह भी समझना जरूरी है कि आरक्षण अपने आप में अंतिम लक्ष्य नहीं है, बल्कि समानता की ओर बढ़ने का एक साधन है। जैसे-जैसे समाज में बदलाव आएगा और महिलाओं के सामने खड़ी बाधाएँ कम होंगी, वैसे-वैसे इस तरह के उपायों की आवश्यकता भी कम हो सकती है। लेकिन वर्तमान समय में, जब असमानता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, तब आरक्षण एक अनिवार्य उपाय बन जाता है। संसद में महिलाओं के आरक्षण की यात्रा भारत के लोकतंत्र की परिपक्वता की परीक्षा भी है और उसके भविष्य को दिशा देने का अवसर भी। इसे तेजी से लागू करने के लिए केवल प्रशासनिक दक्षता ही नहीं, बल्कि दूरदर्शी सोच और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। यदि भारत इस दिशा में साहसिक कदम उठाता है, तो वह एक बार फिर विश्व के सामने एक आदर्श प्रस्तुत कर सकता है। अब सवाल यह नहीं है कि क्या हम यह कर सकते हैं, बल्कि यह है कि क्या हम इसे बिना और देर किए करने का साहस दिखाएँगे।

क्यों बढ़ रहा है होम्योपैथी पर भरोसा?

विश्व होम्योपैथी दिवस पर विशेष

श्वेता गोयल

लेखक शिक्षक हैं।

प्रतिवर्ष 10 अप्रैल को विश्वभर में 'विश्व होम्योपैथी दिवस' उस महा चिकित्सक, शोधकर्ता और वैज्ञानिक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनीमैन की जयंती के रूप में मनाया जाता है, जिन्होंने चिकित्सा विज्ञान को एक नई दिशा देते हुए होम्योपैथी जैसी विशिष्ट उपचार पद्धति का विकास किया। इस वर्ष यह दिवस उनकी 271वीं जयंती के रूप में मनाया जा रहा है, जो न केवल उनके योगदान को स्मरण करने का अवसर है बल्कि वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों की बढ़ती प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डालता है। विश्व होम्योपैथी दिवस 2026 की थीम 'स्थायी स्वास्थ्य के लिए होम्योपैथी' है, जो एकीकृत चिकित्सा, नैतिक उपचार पद्धतियों और साक्ष्य-आधारित अनुसंधान के माध्यम से सार्वजनिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने पर केंद्रित है। यह थीम ऐसे समय में विशेष महत्व रखती है, जब दुनिया दीर्घकालिक बीमारियों, मानसिक स्वास्थ्य संकट और जीवनशैली जनित रोगों से जूझ रही है।

होम्योपैथी शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों 'होमियो' (समान) और 'पाथोस' (रोग या पीड़ा) से मिलकर बना है, जिसका मूल सिद्धांत है 'समः समम् शमयति' अर्थात् समान से समान का उपचार। इस सिद्धांत के अनुसार, जिस पदार्थ से किसी स्वस्थ व्यक्ति में विशेष लक्षण उत्पन्न होते हैं, वही पदार्थ अत्यंत सूक्ष्म मात्रा में रोगी में उन्हीं लक्षणों को दूर करने की क्षमता रखता है। यह विचार चिकित्सा के पारंपरिक दृष्टिकोण से भिन्न होते हुए भी एक समग्र और व्यक्ति-केंद्रित उपचार प्रणाली प्रस्तुत करता है। डॉ. हैनीमैन ने 18वीं शताब्दी के अंत में उस समय की कठोर और दुष्प्रभावयुक्त चिकित्सा पद्धतियों के विरुद्ध एक सुरक्षित और कोमल विकल्प के रूप में होम्योपैथी की नींव रखी। उन्होंने औषधियों के प्रभावों का सूक्ष्म अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि अत्यधिक तनुकरण (डाइल्यूशन) के बाद भी दवाओं में औषधीय गुण बने रहते हैं। यही 'सूक्ष्म खुराक, व्यापक असर' की अवधारणा होम्योपैथी की सबसे विशिष्ट पहचान है। वर्तमान समय में, जब स्वास्थ्य सेवाओं की लागत लगातार बढ़ रही है और दवाओं के दुष्प्रभाव एक बड़ी चिंता बन चुके हैं, होम्योपैथी एक सुरक्षित, सस्ती और दीर्घकालिक समाधान के रूप में उभर रही है। यह पद्धति न केवल रोग के लक्षणों को नियंत्रित करने का प्रयास करती है बल्कि शरीर की स्वाभाविक रोग प्रतिरोधक क्षमता को सक्रिय कर रोग के मूल कारण को समाप्त करने की दिशा में कार्य करती है। यही कारण है कि इसे 'होलिस्टिक' या समग्र चिकित्सा पद्धति भी कहा जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, पारंपरिक और वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों को बढ़ावा दिए बिना सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा के लक्ष्य को प्राप्त करना कठिन है। होम्योपैथी आज 100 से अधिक देशों में प्रचलित है और इसे दुनिया की तेजी से बढ़ती चिकित्सा प्रणालियों में गिना जाता है। भारत इस क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, जहां केन्द्रीय आयुष मंत्रालय के अंतर्गत होम्योपैथी के प्रचार-प्रसार, शिक्षा, अनुसंधान और मानकीकरण के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं।

हालांकि, होम्योपैथी को लेकर वैज्ञानिक समुदाय में मतभेद भी मौजूद हैं। कुछ विशेषज्ञ इसकी प्रभावकारिता पर प्रश्न उठाते हैं और इसे अधिक प्रमाण-आधारित शोध की आवश्यकता वाली पद्धति मानते हैं। यही कारण है कि विश्व होम्योपैथी दिवस की थीम में अनुसंधान और साक्ष्य-आधारित चिकित्सा पर विशेष जोर दिया गया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि होम्योपैथी के सिद्धांतों और उपचारों का आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों और क्लिनिकल ट्रायल्स के माध्यम से गहन अध्ययन किया जाए ताकि इसकी विश्वसनीयता और स्वीकार्यता को और मजबूत किया जा सके। एकीकृत चिकित्सा की अवधारणा भी आज तेजी से उभर रही है, जिसमें एलोपैथी, आयुर्वेद, योग, यूनानी और होम्योपैथी जैसी विभिन्न पद्धतियों को मिलाकर रोगी के समग्र उपचार पर बल दिया जाता है। इस दृष्टिकोण में होम्योपैथी की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि यह शरीर, मन और भावनाओं के संतुलन को ध्यान में रखते हुए उपचार प्रदान करती है। होम्योपैथी दवाएं दिखने में भले ही एक जैसी लगती हैं किन्तु वास्तव में विश्वभर में होम्योपैथी की चार हजार से भी ज्यादा तरह की दवाएं हैं। होम्योपैथी के संस्थापक डॉ. सैमुअल हैनीमैन का कहना था कि इलाज का उच्चतम आदर्श सबसे भरोसेमंद और कम से कम हानिकारक तरीके से स्वास्थ्य की तेज, कोमल और स्थायी बहाली है। चूंकि बहुत सारी होम्योपैथी दवाओं का असर रोगी पर कुछ धीमी गति से होता है जबकि एलोपैथी दवाएं रोगी पर तुरंत असर दिखाती हैं, इसीलिए हाम्योपैथी भले ही एलोपैथी जितनी लोकप्रिय नहीं है लेकिन दुनियाभर में यह उपचार के सबसे लोकप्रिय वैकल्पिक रूप में मौजूद हैं। दरअसल होम्योपैथिक उपचार सबसे सरल उपचार है, जो शरीर को अधिक प्राकृतिक उपचार प्रक्रिया की अनुमति देता है। होम्योपैथी दवाएं चिकित्सा का एक सुरक्षित और प्राकृतिक विकल्प प्रदान करती हैं, जो बिना किसी दुष्प्रभाव अथवा दवा के परस्पर क्रिया का कारण बनता है। आज जब वैश्विक स्वास्थ्य व्यवस्था अनेक चुनौतियों से जूझ रही है, जैसे एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस, जीवनशैली जनित रोगों में वृद्धि, मानसिक स्वास्थ्य संकट और स्वास्थ्य सेवाओं की असमान पहुंच, ऐसे में होम्योपैथी जैसी पद्धतियां एक वैकल्पिक ही नहीं बल्कि पूरक समाधान के रूप में सामने आ रही हैं। अंततः, होम्योपैथी का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि यह परंपरा और विज्ञान के बीच संतुलन स्थापित करते हुए स्वयं को कितना प्रमाणित और आधुनिक बना पाती है। यदि अनुसंधान, शिक्षा और नीति निर्माण के स्तर पर समन्वित प्रयास किए जाएं तो यह पद्धति न केवल वैकल्पिक चिकित्सा के रूप में बल्कि वैश्विक स्वास्थ्य व्यवस्था के एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में स्थापित हो सकती है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

बुद्धिजीवियों में साहित्यिक बीमारियां

व्यंग्य

डॉ.महेन्द्र अग्रवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

आप बुद्धिजीवी हैं या अपने को मानते हैं तो आपको निश्चित ही बुद्धिजीवियों वाली बीमारियां भी हांगी। यदि ऐसा नहीं है तब आपको तथाकथित (सोकाल्ड) बुद्धिजीवी कहा जा सकता है किन्तु माना नहीं जायेगा भले ही आप 'इन्टेलीजेंट एसोशिएसन' के अध्यक्ष का सर्टिफिकेट जेब में रखकर घूमें अथवा 'डोर टू डोर' ही दिखाते फिरें।लिटरेरी इलनेस ऑफ इन्टेलीजेंट एक कॉमन वर्ड है।इलनेस ऑफ इन्टेलीजेंट में भी नाम एक ,काम अनेक की तर्ज पर अनेक बीमारियां होती हैं जिन्हें विशेषज्ञ अलग-अलग नाम देते हैं।जैसे बुखार की कई किस्में हैं वाइरल, मलेरिया, टायफाइड। इसी तरह बुद्धिजीवियों में सामान्यतः 'डायरिया ऑफ थॉट', सीक्रेसन ऑफ कान्सेप्ट', फीवर ऑफ कॉन्फीडेंस, इलनेस इन स्पीच, एकेडमिक सिफलिस, हाइपरटेंसन ऑफ ओवर टॉक, क्राइसेस ऑफ फेथ, अनएक्सपेक्टेड एक्सपेंसन ऑफ क्रिटिक एबिलिटी, अनलिटरेरी न्यूरोलॉजिकल डिसआर्डर, एबनार्मल पोइटिक एबार्शन, ओवर कॉन्फीडेंस इन सिंगिग, लिटरेरी कनिंगनेस, अनसोशल गेदरिंग इन इवनिंग, वल्गर एप्रोच इन स्टोरी एंड नॉवेल, रिपीटेसन ऑफ सिम्बल्स, आदि महत्वपूर्ण हैं। ज़रुरी है कि इनकी प्रकृति को समझने का प्रयास करें जिससे इनकी औक़ात और कथित 'हाइस्टेटस' बीमारियों को भली-भांति समझ सकें ,वक़्त मौके उनसे, उनके संक्रमण से बच सकें।

लिटरेरी इलनेस ऑफ इन्टेलीजेंट में मेडीकल साइंस की तरह डायग्नोस नहीं होता।इसलिए प्रोफेसर भी 'ओरल सेप्सिस' को समझने में भूल कर जाते हैं। इनमें मुखगुहा के संक्रमण के कारण रचनायें मुख में भरी रहती हैं किन्तु बाहर नहीं निकलतीं विद्धानों ने इसे 'ओरल स्पीचिंग फिसर' भी कहा है।मुख से नीचे उतरते ही अमाशय में 'पोइम पोइज़निंग' की समस्या दिखाई देती है।जो रचनायें अपठनीय रह जाती हैं वे अमाशय में उत्सर्जित पदार्थों के सम्पर्क में आकर विष का रूप ले लेती हैं।ऐसी अवस्था में रचनाकार जहां कहीं, भैंस की तरह डकारने लगता है।

साहित्यकारों में अवसाद के टयूमर की संभावना भी होती है। यह टयूमर उन्हें रचनाधर्मिता के स्तर पर नए आयाम भी देता है और समकालीन परिदृश्य से अप्रासंगिक भी सिद्ध कर सकता है। ऐसी अवस्था में यह डिप्रेसन उन्हें 'सेरीब्रो स्पाइनल मेनिनजाइटिस' का शिकार भी बना सकता है।'एल्कोहलिक वॉमिटिंग' भी सामान्य है।साहित्यकार काव्य सृजन या काव्य प्रस्तुति की असरदार अभिव्यक्ति के लिए शासन की आबकारी व्यवस्था को प्रत्यक्ष सहयोग करते हैं।इसमें शासन को अधिक लाभ होने से उसे आर्थिक क्षति के साथ दुर्गति भी कंधों पर उठानी पड़ती है।अपमान और धिक्कार का प्रत्यक्ष अनुभव होने से वे दूसरे दिन भी शासन को लाभान्वित करते हैं।यह कभी कभी 'अनसोशल गेदरिंग इन इवनिंग' के कारण भी होता है। 'एबनार्मल पोइटिक एबार्श्न'भी नवोदितों से लेकर प्रौढ़ कवियों, मंचीय उठाइगीरों में मिलने वाली सामान्य बीमारी है।इसमें सृजनावस्था में अवरोध के कारण कच्ची पक्की,अधपकी सामग्री को अपने मन मस्तिष्क में संजोये रखने का प्रयास निष्फल होने से रचनायें काल-कवलित हो जाती हैं। मानसिक क्षोभ होना इसका प्रमुख लक्षण है।कुछ विशेषज्ञ इसे 'लिटरेरी नार्मल एर्बाशन' (सामान्य साहित्यिक गर्भपात) कहते हैं।

'रीडिंग एसीडिटी' तथा 'प्रजेन्टेशनल अस्थमेटिक अटेक' भी ज्ञात बीमारियां हैं जो अस्सी प्रतिशत साहित्यकारों में पाई जाती हैं। इसमें काव्यपाठ से पहले तनाव व हताशा के कारण अम्लीय स्त्राव बढ़ने और बार बार ऊपर उठने से श्वांस सम्बन्धी समस्यायें उभरने लगती हैं।'डायरिया ऑफ थॉट' (वैचारिक अतिसार) तथा 'सीक्रेसन ऑफ कान्सेप्ट'को लेकर समीक्षकों में गहरा मतभेद है।कुछ इन्हें विषय विशेषज्ञों से सम्बन्धित मानते हैं और कुछ इन्हें केवल माइक पकड़ प्रेमियों से।'डायरिया ऑफ थॉट' लेखक व वक्ता दोनों में समान रुप से पाया जाता है।विषय कोई भी हो ,विषय से इतर ज्ञान का प्रदर्शन और भाषा में अज्ञात और जटिलतम शब्दों का प्रयोग इसमें सहजता से मिलता है।

'हाइपरटेंसन ऑफ ओवर टॉक' उनके उच्चारण व भाव भंगिमाओं से महसूस की जा सकती है। कुछ स्थितियों में 'कार्डियक पल्पीटेशन' भी दिखाई देता है।तब वक्ता 'फेरिन्जयल ब्रोंकाइटिस' दो चार होकर 'मेमोरियल मेनिया'(स्मृति उन्माद) की स्थिति में भी आ जाता है।'ओवर कॉन्फीडेंस इन सिंगिग' भी मंचों पर रेंकने वालों में होता है। डलनेस इन स्पीच' घर में आइने के सामने वर्षों की तपस्या की मांग करती है।'अनलिटरेरी कोलाइटिस' में अपच और संक्रमण की संयुक्त अवस्था प्रत्यक्ष दृष्टिगत होती है।इससे आंतों में आंतरिक दबाव बढ़ता है।सूजन आने के बाद वायु परेशान करती है।'लिटरेरी कनिंगनेस' में सृजनधर्मी एक दूसरे से अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा कर कब्र खोदने को उतारू हो जाते हैं।

'अनएक्सपेक्टेड एक्सपेंसन ऑफ क्रिटिक एबिलिटी' (आलोचकीय क्षमता का अप्रत्याशित फैलाव) समालोचकों में मिलती है। ऊलजुलूल तुकबाजी को काव्यात्मक सिद्ध करने का असफल प्रयास 'अनलिटरेरी यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर' के तहत लिया जाता है।'वल्गर एप्रोच इन स्टोरी एंड नॉवेल' नाम की बीमारी पुरुष व महिला रचनाकारों की कृतियों में समान रूप से पाई जाती है। इसके उन्माद में सहभोग की बारीक अनुभूतियां, व कुछ कुंठाओं की चित्रात्मक अभिव्यक्ति, मुख्य लक्ष्य होता है। वैयक्तिक अनुभव और अनुभूतियों का सार्वजनिक प्रदर्शन इनकी अतिरिक्त विशेषता है।हरि अनंत, हरि कथा अनंता। जो अनंत है,उसे क्या शब्दों में बांधा जा सकता है? कदापि नहीं, बांधना भी नहीं चाहिए। यही स्थिति हमारे होनहार साहित्यिकारों के साहित्यिक रोगों की है।

बात फूलों की

ब्रजेश कानूनगो

लेखक स्तंभकार हैं।

जीवन का मौन दर्शन है चेरी ब्लॉसम

सकुरा का यह सौंदर्य जितना आँखों को सुकून देता है, उससे कहीं अधिक हमारी आत्मा को झकझोरता है। इसकी क्षणभंगुरता (Impermanence) हमें उस परम सत्य की याद दिलाती है जिसे हम अक्सर भूल जाते हैं-कि सुंदरता चाहे कितनी भी अगाध क्यों न हो, वह अस्थायी है। जापानी संस्कृति में इसे 'मोनो नो अवेयर' कहा गया है, यानी उस सुंदरता के प्रति गहरी संवेदनशीलता जो सदा के लिए नहीं रहने वाली। यह फूल हमें सिखाते हैं कि जीवन की सार्थकता उसकी लंबाई में नहीं, बल्कि उसकी गहराई और उस संक्षिप्त पल की शुद्धता में है जिसे हम पूरी जीवंतता के साथ जीते हैं। सकुरा का गिरना मृत्यु का प्रतीक नहीं, बल्कि एक सुंदर और गरिमामयी विदाई का उत्सव है। आइए, वसंत की इस नश्वर सुगंध के साथ हम जीवन, प्रकृति और दर्शन के इस अनूठे संगम को समझने की यात्रा पर चलें।

जब शीत की कठोरता विदा लेती है और प्रकृति अपनी पहली अंगड़ाई लेती है, तब जापान की धरती पर एक अद्भुत चमत्कार घटित होता है। यह चमत्कार है-'सकुरा' या चेरी ब्लॉसम का खिलना। यह केवल फूलों का खिलना भर नहीं है, बल्कि यह आकाश और धरती के बीच गुलाबी रंगों में लिखा गया एक प्रेम-पत्र है।

कल्पना कीजिए, जैसे ही हल्की ठंडी हवा चलती है, लाखों नन्हे फूल एक साथ अपनी पंखुड़ियाँ खोलते हैं और देखते ही देखते पूरा परिदृश्य एक गुलाबी कोहरे (Pink Mist) में सिमट जाता है। ये फूल न तो बहुत दिनों तक टिकने का वादा करते हैं और न ही मुरझाने का शोक मनाते हैं; वे तो बस खिलते हैं–पूरी दिव्यता के साथ, पूरी भव्यता के साथ।

सकुरा का यह सौंदर्य जितना आँखों को सुकून देता है, उससे कहीं अधिक हमारी आत्मा को झकझोरता है। इसकी क्षणभंगुरता (Impermanence) हमें उस परम सत्य की याद दिलाती है जिसे हम अक्सर भूल जाते हैं– कि सुंदरता चाहे कितनी भी अगाध क्यों न हो, वह अस्थायी है। जापानी संस्कृति में इसे 'मोनो नो अवेयर' कहा गया है, यानी उस सुंदरता के प्रति गहरी संवेदनशीलता जो सदा के लिए नहीं रहने वाली।

यह फूल हमें सिखाते हैं कि जीवन की सार्थकता उसकी लंबाई में नहीं, बल्कि उसकी गहराई और उस संक्षिप्त पल की शुद्धता में है जिसे हम पूरी जीवंतता के साथ जीते हैं। सकुरा का गिरना मृत्यु का प्रतीक नहीं, बल्कि एक सुंदर और गरिमामयी विदाई का उत्सव है। आइए, वसंत की इस नश्वर सुगंध के साथ हम जीवन, प्रकृति और दर्शन के इस अनूठे संगम को समझने की यात्रा पर चलें।

'चेरी ब्लॉसम' जिसे स्थानीय भाषा में 'सकुरा' (Sakura) कहा जाता है, केवल एक फूल नहीं बल्कि जापान की आत्मा और उसकी संस्कृति का प्रतिबिंब है। वानस्पतिक विज्ञान (Botanical Science) की दृष्टि से यह सकुरा 'रोज़ेसी' (Rosaceae) परिवार के 'प्रूनस' (Prunus) वंश का पौधा है। जापान में इसकी 200 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं। सबसे लोकप्रिय प्रजाति 'सोमेई योशिनो' (Somei Yoshino) है, जिसके फूल लगभग सफेद और हल्के गुलाबी रंग के होते हैं। इसके फूलों की विशेषता यह है कि ये पत्तियों के आने से पहले खिलते हैं, जिससे पूरा पेड़ एक गुलाबी बादल की तरह दिखाई देता है। आमतौर पर ये मार्च के अंत से अप्रैल की शुरुआत तक खिलता है। यह समय उत्तर की ओर बढ़ते हुए बदलता रहता है।

दरअसल, चेरी ब्लॉसम का सौंदर्य उसकी सामूहिकता में है। जब हजारों पेड़ एक साथ खिलते हैं, तो वे परिदृश्य को एक स्वप्निल (ethereal) रूप दे देते हैं। रात के समय जब इन पेड़ों को रोशन किया जाता है, तो इसे 'योज़ाकुरा' कहा जाता है, जो एक जादुई अनुभव प्रदान करता है। सकुरा जापान की अर्थव्यवस्था के लिए एक 'गोल्डन पीरियड' की तरह है। हर साल लाखों अंतरराष्ट्रीय पर्यटक 'चेरी ब्लॉसम सीजन' के दौरान जापान पहुँचते हैं। एक अनुमान के अनुसार, सकुरा सीजन जापान की अर्थव्यवस्था में प्रतिवर्ष लगभग 600 अरब येन से अधिक का योगदान देता है। इस दौरान 'सकुरा फ्लेवर्ड' खाद्य पदार्थ (जैसे चाय, किटकैट, ड्रिंक्स) और विशेष मर्चेंडाइज की भारी मांग रहती है।

जापान में चेरी ब्लॉसम का आनंद लेने की सदियों पुरानी परंपरा को 'हानामी' कहा जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'फूलों को देखना'।अनेक ट्रेवलरों के यूट्यूब चैनलों के वीडियोस में हमने देखा कि लोग पार्कों में पेड़ों के नीचे नीले रंग की चटाइयां बिछाकर अपने परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ पिकनिक मनाते हैं। यह सामाजिक मेलजोल, संगीत, नृत्य और खान-पान का समय होता है, जो जापानी समाज की कार्य-प्रधान संस्कृति में मानसिक शांति और खुशी का संचार करता है।

चेरी ब्लॉसम का सबसे गहरा पक्ष उसका दार्शनिक संदेश है, जो जापानी संस्कृति के 'मोनो नो अवेयर' (Mono no aware) के सिद्धांत से जुड़ा है। सकुरा केवल एक या दो सप्ताह के लिए खिलता है और फिर धीरे-धीरे झड़ जाता है। यह हमें सिखाता है कि जैसे फूल अपनी चरम सुंदरता पर पहुँचते ही गिर जाते हैं, वैसे ही मानव जीवन भी अस्थायी है। इसकी क्षणभंगुरता हमें संदेश देती है कि सुंदरता और जीवन का आनंद 'अभी' लेना चाहिए, क्योंकि कल यह नहीं रहेगा।

सकुरा वसंत के आगमन का प्रतीक है। यह कड़ाके की ठंड के बाद प्रकृति के पुनरुद्धार और नई आशाओं का संदेश देता है। जापान में शैक्षणिक और वित्तीय वर्ष भी अप्रैल (सकुरा के समय) से ही शुरू होता है, जो इसे नई शुरुआत का प्रतीक बनाता है।ऐतिहासिक रूप से, समुराई योद्धा खुद को चेरी ब्लॉसम से जोड़ते थे। जैसे यह फूल मुरझाने से पहले शान से गिरता है, वैसे ही एक योद्धा को अपने चरम पर रहते हुए बिना किसी डर या अफसोस के मृत्यु को गले लगाना चाहिए।

सकुरा याने चेरी ब्लॉसम केवल एक वानस्पतिक घटना नहीं है, बल्कि यह जीवन की सुंदरता और उसकी नश्वरता के बीच के संतुलन का उत्सव है। यह हमें याद दिलाता है कि जीवन कितना भी छोटा क्यों न हो, उसे पूरी भव्यता और शांति के साथ जीना चाहिए।

दृष्टिकोण

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

जिंदगी को किसी ट्रेनिंग से नहीं जीया जा सकता

**जिंदगी को जीने का अर्थ यह है कि आप अपना कार्य सहज तरीके से करते जाए और जो कुछ आसपास हो उसको न केवल स्वीकार करें बल्कि उसे जीवन का हिस्सा बनाकर चलें। बहुत सारे लोग ऐसे मिलते हैं कि उनके लिए जिंदगी का कोई अर्थ होता ही नहीं, बस पड़े होने को ही जीना मान लेते हैं या अपने को एक सुरक्षित खोल में रखते हुए जिंदगी को ऐसे जीते हैं कि दुनिया बस खोल के भीतर ही है। खोल के बाहर उनके हिसाब से कुछ होता नहीं है। इनके लिए अपना बैंक बैलेंस और पूंजी ही सब कुछ होता और उसी को जिंदगी समझ बस गिनते रहते हैं कि क्या कमा लिया। कितना धन बना लिया। धन बनाने के अलावा कुछ सोचते ही नहीं। एक तरह से कह सकते हैं कि उनके लिए जीवन एक सीमित दायरे की कथा है जहां वे सुरक्षित हैं और परिवार को सुरक्षित कर लिये हैं इससे आगे उनके लिए कोई दुनिया है ही नहीं। ये जिस तरह की एकाकी दुनिया जीते हैं उसे सही ढ़ंग से जिंदगी जीना भी नहीं कह सकते पर उनके हिसाब से वही जिंदगी है जिसे वे जी रहे हैं। वहीं बहुत सारे लोग जीवन को जीवन की तरह से जीने में विश्वास करते हैं। उनके यहां जिंदगी घर-परिवार और मित्रों, से होते हुए आसपास की पूरी दुनिया होती है जिसके साथ उठते बैठते मिलते जुलते हैं। इनका कहना होता है कि अकेले भी कोई जिंदगी जीता है क्या। इनके लिए सामाजिक भाव महत्वपूर्ण होता है। जिंदगी को सामाजिक तरीके से जीते हैं। ये किसी भी कोने से हों या किसी भी कोने में रहते हों सबके लिए कुछ न कुछ सोचते रहते हैं। ये किसी के साथ कहीं भी जा सकते हैं। इन्हें अपना काम और दुनिया भर के काम जो दुनियादारी के हिस्से के होते हैं उसे करना ही लक्ष्य होता है। जो अपने आप को सब कुछ मान लेने की गलती कर रहे होते हैं उनके लिए दुनिया आसान नहीं होती। अकेले जो जी रहा वह बस जिंदगी को काट रहा है। उसके लिए जिंदगी है भी और नहीं भी है। वह बस अपनी तरह से पड़ा होता है। पड़ा होना यानी कि अर्थहीन जिंदगी। इसलिए जो आसपास की दुनिया और अपनी दुनिया के बीच तालमेल मिलाकर चलना जानता है उसके लिए कभी भी कहीं भी किसी तरह का संकट आता ही नहीं। यह भी देखने में आता रहा है कि लोग-बाग इसलिए परेशान नहीं है कि उनकी दुनिया में क्या नहीं है या वो क्या कर सकते हैं। बिना कुछ किए भी परेशान हो सकते हैं। कुछ लोग परेशान होने की कला लेकर पैदा होते हैं। वे किसी भी बात को न तो मानते हैं न ही किसी को कुछ समझते हैं। ज्ञान से भरे होते हैं पर उनका ज्ञान सामाजिक अर्थ ग्रहण नहीं करता। अपने आप में ही घूमते रहते हैं। इस तरह के लोग ज्ञान के साथ चक्कर लगाते हैं ज्ञान को बांटते नहीं न ही ज्ञान की कॉपी करने में इनकी दिलचस्पी होती है। ऐसे लोगों के बीच एक बात चलती रहती है कि जमाना बहुत बदल गया है। कोई किसी की सुनता नहीं है। कोई किसी को कुछ मानता ही नहीं। बड़ों का जो लिहाज है वह एक सिरे से गायब है। यह कोई एक दो दिन की बात नहीं है। सदियां गुजर रही हैं सब अपनी अपनी दुनिया में व्यस्त हैं। किसी को यह नहीं पता करना है कि उसके आसपास क्या चल रहा है या कौन क्या है कहां से आता है? क्या करता है? यदि किसी ने पूछ भी लिया किसी प्रसंग में तो इससे ज्यादा उसकी कोशिश रहती है कि वह कुछ न बतावें न ही इस बारे में बात करें। जिंदगी का अर्थ विस्तार केवल भौतिक विस्तार तक सीमित नहीं होता। मनुष्य की सबसे बड़ी चुनौती अपने प्राकृतिक वातावरण को बनाए रखना है। यहां से वह न केवल अपने स्वरूप को जीता है बल्कि जिंदगी को समझने लायक भी होता है। हर आदमी के जीवन का तरीका अलग होता है और हर कोई जीवन की खुशियों को अलग ढ़ंग से ही स्वीकार करता है। आदमी की जरूरत क्या है और जब वह अपनी जरूरत के लिए चलता है तो सीधी सी बात है कि वह अपनी जरूरत को पूरा कर लेगा ।

वह इस तरह चलता है कि उसे दुनिया की समझ है और कोई भी इस तरह की दुनियाथारी के लिए कहीं दूर जाने की जगह अपनी एरिया अपनी जरूरत के साथ चलता है। यह सब देखने की कोशिश करते हुए ही हमें जीवन रथ पर कदम बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। आदमी कितना अपने लिए और कितना दुनिया के लिए चलता है यहीं हमारे सपने व हमारी दुनिया को सेट करने का माध्यम हो सकता है। जो आदमी जरूरत के हिसाब से चलता है उसका महत्व अलग है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि यूं ही चल पड़ते हैं। यदि आदमी यूं ही चल पड़ता है तो साफ है कि वह दुनिया को न तो देख रहा है न ही कुछ समझ रहा है। दुनिया उसकी प्राथमिकता में होती ही नहीं है। वह दुनिया को नहीं जीता न ही दुनिया की कोई गति उसके काम की होती है। वह बस जिंदगी को जी भर लेने के लिए जी रहा होता है। इस तरह से जिंदगी की कहानी को हम लोग जी रहे होते हैं कि अपनी जिंदगी नहीं किसी और की जिंदगी को जी रहे हों और यह जीना भी भला कैसे जीना हुआ जहां हम होते ही नहीं। जहां पर आप मन से नहीं हैं वहां कुछ भी हो उसके होने और न होने में हमारा कोई अर्थ ही नहीं होता है। जिंदगी को जिंदगी की तरह जीते हुए ही जीवन संसार व अनुभव संसार को समझा जा सकता है। जो लोग यह मानते हैं कि इसके लिए कहीं दूर जाना है या कोई स्पेशल ट्रेनिंग लेनी है तो वे सब ग़लत हो सकते हैं क्योंकि जिंदगी को किसी ट्रेनिंग से नहीं समझा जा सकता है। समय के साथ, अनुभव के साथ आप सीखते जाते हैं । यह भी सच है कि समय के साथ जिंदगी बहुत कुछ सीखा देती है। जीवन जीने का जो अनुभव क्रम है वह आदमी को बड़ा बनाती है। यदि आपके पास अनुभव नहीं है तो आप कहीं हों लें किसी भी पद पर पहुंच जाएं, कुछ खास होने वाला नहीं है। जीवन जीते हुए जिंदगी को अर्थ के साथ जीना ही मानव के लिए अर्थ पूर्ण होता है। हमारे जीवन में जो कुछ गर्व करने लायक है जो जीने लायक है वह अपनी दुनिया में औरों की दुनिया को जीते समझते हुए जो अर्थ और सीख मिलती है वहीं पीढ़ी दर पीढ़ी काम आती है।

संकट मोचन संगीत समारोह

राजेन्द्र शर्मा

संकट मोचक बाबा ने सुनी जसपिंदर नरुला की पुकार....

पांच दशक पहले जालन्धर दूरदर्शन के उद्घाटन के अवसर पर अपनी मंचीय प्रस्तुति का सफर प्रारम्भ करने वाली जसपिंदर नरुला तब इतनी छोटी थी कि प्रस्तुति के लिए उन्हें गोद में उठाकर मंच पर लाया था। 'दमादम मस्त कलंदर' और 'प्यार तो होना ही था' जैसे सुपरहिट गाने गा चुकी बहुमुखी प्रतिभाशाली कलाकार है। हिन्दी और पंजाब फिल्मों में पार्श्व गायन के साथ-साथ सूफी गायन, भजन गायन और शास्त्रीय गायन में महारत हासिल जसपिंदर नरुला को देश के चौथे नागरिक सम्मान पद्मश्री से नवाजा जा चुका है। एक कलाकार के लिए इससे अधिक सम्मान की बात क्यों हो सकती है परन्तु जसपिंदर नरुला का ख्वाब अभी पूरा नहीं हुआ था। अपने इस ख्वाब को साकार होने के लिए जसपिंदर नरुला कुछ समय पहले संकट मोचन मंदिर में आकर संकट मोचन के दरबार में अपनी अर्जी लगाकर गयी थी और संकट मोचन ने इसी साल उनकी सुन ली। संकट मोचन संगीत समारोह के 103वें आयोजन की तीसरी निशा में जसपिंदर नरुला ने संकट मोचन के दरबार में अपनी हाजिरी लगायी और ऐसे दमदार हाजिरी लगायी कि श्रोताओं को उनकी प्रस्तुति बरसों तक याद रहेगी। पार्श्व गायक संकट मोचन के दरबार में जब अपनी हाजिरी लगाते हैं तो सामान्य रुप से श्रोताओं तक अपनी पैठ बनाने के लिए फिल्मों में गाये अपने गाने पहले सुनाते हैं किन्तु जसपिंदर नरुला की तो बरसों की साध पूरी हो रही थी,उन्होनें मंच से कहा कि यह क्षण उनके अब तक के जीवन का सबसे कीमती क्षण है, फिल्मों में गाये अपने लोकप्रिय गाने को भूलकर जसपिंदर नरुला ईश्वर के समक्ष ऐसी नतमस्तक हुई कि उन्होनें भजन, गुरुवाणी के शब्द गाकर श्रोताओं को आश्चर्यचकित कर दिया। अपनी आंतरिक खुशी में मग्न जसपिंदर नरुला ने अपने डेढ़ घंटे की प्रस्तुति में हनुमान, राम और गुरु नानक देव की स्तुति की। जसपिंदर नरुला ने भक्ति भाव में डूबते हुए ऐसा समा बांधा कि श्रोता तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उन्हीं के साथ गाने लगे। उनकी प्रस्तुति के दौरान ठंडी हवाओं और हल्की बारिश ने माहौल को और भावपूर्ण बना दिया गया। अपनी प्रस्तुति के दौरान जसपिंदर नरुला सिर पर दुपट्टा ओढ़े रही जसपिंदर नरुला के जलवे को देख 42 साल पहले 1984 में दिल्ली में आयोजित एक शोर की याद ताजा हो उठी। श्रोताओं ने यह भी अनुभव किया कि महफिल को लूटने का उनका अंदाज आज भी अपनी जगह कायम है। श्रोता जिस तल्लीनता के साथ दशकों पहले दमादम मस्त कलंदर अली दा पहला नंबर को सुना करते थे, उससे चार गुना तल्लीनता के साथ संकट मोचन दरबार में श्रोताओं ने जसपिंदर नरुला के भजनों,स्तुतियों को सुना। जसपिंदर नरुला ने जिस भाव, ऊर्जा और आध्यात्मिकता का अद्भुत संगम में डुबकी लगाते हुए संकट मोचन दरबार में गायी, उससे उनका कहा कि यह उनका जीवन का सबसे कीमती क्षण है,पूरी तरह साबित हो गया। तीसरी निशा की भोर में समाप्ति पर श्रोता के मन मस्तिष्क में जसपिंदर नरुला छायी थी, ईश्वरीय कृपा इसे ही कहते हैं।

एक दौर में 'दमादम मस्त कलंदर अली दा पहला नंबर' से धूम मचा चुकी पार्श्व गायिका जसपिंदर नरुला न जाने कितने सालों से अपने दिलो-दिमाग में यह ख्याल संजोये थी कि एक दिन वह भी वाराणसी में हर बार हनुमान जयंती के अवसर पर आयोजित होने वाले संकट मोचन संगीत समारोह में संकट मोचन के दरबार में अपनी हाजिरी लगायें। पांच दशक पहने जालन्धर दूरदर्शन के उद्घाटन के अवसर पर अपनी मंचीय प्रस्तुति का सफर प्रारम्भ करने वाली जसपिंदर नरुला तब इतनी छोटी थी कि प्रस्तुति के लिए उन्हें गोद में उठाकर मंच पर लाया था। 'दमादम मस्त कलंदर' और 'प्यार तो होना ही' था जैसे सुपरहिट गाने गा चुकी बहुमुखी प्रतिभाशाली कलाकार है। हिन्दी और पंजाब फिल्मों में पार्श्व गायन के साथ-साथ सूफी गायन, भजन गायन और शास्त्रीय गायन में महारत हासिल जसपिंदर नरुला को देश के चौथे नागरिक सम्मान पद्मश्री से नवाजा जा चुका है। एक कलाकार के लिए इससे अधिक सम्मान की बात क्यों हो सकती है परन्तु जसपिंदर नरुला का ख्वाब अभी पूरा नहीं हुआ था।

अपने इस ख्वाब को साकार होने के लिए जसपिंदर नरुला कुछ समय पहले संकट मोचन मंदिर में आकर संकट मोचन के दरबार में अपनी अर्जी लगाकर गयी थी और संकट मोचन ने इसी साल उनकी सुन ली। संकट मोचन संगीत समारोह के 103वें आयोजन की तीसरी निशा में जसपिंदर नरुला ने संकट मोचन के दरबार में अपनी हाजिरी लगायी और ऐसे दमदार हाजिरी लगायी कि श्रोताओं को उनकी प्रस्तुति बरसों तक याद रहेगी।

दो दिवसीय जिला स्तरीय पुस्तक मेले का शुभारंभ विधायक नीना वर्मा ने किया

रियायती दरों पर गुणवत्तापूर्ण सामग्री मिलने से अभिभावकों को मिली आर्थिक राहत

धार। कलेक्टर प्रियंक मिश्रा के मार्गदर्शन में आज धार जिले के सांदीपनी महाविद्यालय परिसर में दो दिवसीय जिला स्तरीय पुस्तक मेले का उत्साहपूर्वक शुभारंभ किया गया। मेले में गणवेश का भी वितरण किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विधायक नीना वर्मा रहीं, जिन्होंने फीता काटकर मेले का विधिवत उद्घाटन किया।

इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेढ़ा, नगर पालिका अध्यक्ष नेहा बोडाने सहित जनप्रतिनिधि, जिला शिक्षा अधिकारी केशव वर्मा, डीपीसी खरे और वरिष्ठ अधिकारी विशेष रूप से उपस्थित रहे। अतिथियों ने मेले में लगाए गए विभिन्न स्टॉलों का सूक्ष्म अवलोकन किया और वहां उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं व व्यवस्थाओं की सराहना की।

अभिभावकों और विद्यार्थियों में भारी उत्साह- मेले के पहले ही दिन बड़ी संख्या में विद्यार्थी और उनके अभिभावक शैक्षणिक सामग्री खरीदने पहुँचे। बाजार से कम और रियायती दरों पर पुस्तकें व गणवेश उपलब्ध होने के कारण लोगों में विशेष उत्साह देखा गया। अभिभावकों ने शासन की इस पहल का स्वागत करते हुए कहा कि एक ही स्थान पर कम कीमतों में उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री मिलने से उन्हें बड़ी आर्थिक राहत मिली है।

विक्रेताओं ने जताया सकारात्मक रुख- मेले में स्टॉल लगाने वाले व्यापारियों और पुस्तक विक्रेताओं ने भी आयोजन के प्रति सकारात्मक रुख दिखाया। विक्रेताओं के अनुसार, शुभारंभ के साथ ही उन्हें ग्राहकों का बेहतर प्रतिसाद मिला है। उन्होंने कहा कि प्रशासन के इस साझा मंच से उन्हें अधिक से अधिक उपभोक्ताओं तक सीधे पहुँचने का अवसर प्राप्त हुआ है।

शिक्षा के प्रति जागरूकता का प्रयास- उपस्थित जनप्रतिनिधियों ने संबोधित करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप विद्यार्थियों को सुलभ और सस्ती शिक्षा उपलब्ध कराना शासन की प्राथमिकता है। इस प्रकार के मेलों से न केवल पालकों की परेशानी कम होती है, बल्कि समाज में शिक्षा के प्रति एक सकारात्मक वातावरण और जागरूकता का संचार होता है।

मेला 10 अप्रैल 2026 तक सांदीपनी महाविद्यालय परिसर में जारी रहेगा, जहाँ नागरिक अपनी आवश्यकतानुसार सामग्री का क्रय कर सकेंगे।

मध्य प्रदेश का पहला आईसीटी मेला धार में संपन्नः तकनीक आधारित शिक्षण से संवरेगी बच्चों की मेधा

धार। धार जिले में आज शिक्षा और तकनीक के समन्वय का एक नया अध्याय जुड़ा। मुस्कान ड्रीम्स संस्था द्वारा राज्य शिक्षा केंद्र के सहयोग से मध्य प्रदेश का पहला आईसीटी (ICT) मेला सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। डाइट धार में आयोजित इस गरिमामयी कार्यक्रम में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अभिषेक चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए।

प्रमुख उपस्थिति एवं आयोजन- इस मेले के सफल संचालन में डाइट प्राचार्य मनोज शुक्ला एवं डाइट प्रशिक्षण प्रभारी कमल ठाकुर का योगदान रहा। कार्यक्रम के दौरान जिला शिक्षा अधिकारी केशव वर्मा, जिला परियोजना समन्वयक प्रदीप खरे तथा मुस्कान ड्रीम्स के निदेशक (साझेदारी) मनोज पचौरी विशेष रूप से उपस्थित रहे। पूरे आयोजन का नेतृत्व राज्य प्रभारी सुश्री गुंजन शर्मा एवं मुस्कान ड्रीम्स की टीम द्वारा किया गया।

तकनीकी संवाद और नवाचार- आईसीटी मेले का प्राथमिक उद्देश्य जिले के उत्कृष्ट विद्यालयों को सम्मानित करना तथा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के बीच कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के आदान-प्रदान को बढ़ावा देना था।

पैनल चर्चा: कार्यक्रम में चार विद्यालयों के विद्यार्थियों ने पैनल चर्चा में भाग लिया। उन्होंने साझा किया कि डिजिटल माध्यमों और एआई तकनीक ने उनकी पढ़ाई को न केवल सरल और रोचक बनाया है, बल्कि नई जानकारियों के द्वार भी खोले हैं। **भविष्य के लक्ष्य:** मेले में आए विद्यार्थियों ने डॉक्टर, इंजीनियर और सिविल सेवक बनकर देश सेवा करने का अपना संकल्प भी साझा किया।

आगामी सत्र के लिए विस्तार की घोषणा- मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अभिषेक चौधरी ने शिक्षकों के उत्कृष्ट कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि तकनीकी शिक्षण विद्यार्थियों की क्षमता में सकारात्मक बदलाव ला रहा है। उन्होंने घोषणा की कि आगामी सत्र में मुस्कान ड्रीम्स की लर्निंग वीडियो सुविधा का विस्तार जिले के अन्य 150 आईसीटी विद्यालयों तक किया जाएगा।

जिलेभर की सहभागिता- इस मेले में धार जिले के सभी 13 विकासखंडों से प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। प्रत्येक विकासखंड से बीआरसी (BRC) समन्वयक और एमआईएस (MIS) समन्वयक उपस्थित रहे। जिले के लगभग 80 विद्यालयों से 150 शिक्षकों और प्रत्येक विकासखंड से चयनित विद्यार्थियों ने इस नवाचार का लाभ उठाया। यह आयोजन शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी सशक्तिकरण और डिजिटल साक्षरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ है।

उप मुख्यमंत्री ने नहर परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की

निर्माण बाधाओं को दूर कर किसानों के खेतों तक पानी पहुँचाने के दिए निर्देश

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने सर्किट हाउस रीवा में विभिन्न नहर परियोजनाओं के निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। बैठक में उप मुख्यमंत्री ने कहा कि नहर परियोजनाओं के क्रियान्वयन में आ रही सभी तकनीकी एवं प्रशासनिक बाधाओं को तत्काल दूर किया जाए, जिससे किसानों के खेतों तक सिंचाई के लिए अविलंब पानी पहुँचाया जा सके। सिंचाई परियोजनाओं का उद्देश्य अंतिम छोर तक के किसानों को लाभान्वित करना है। निर्माण कार्य में अनावश्यक विलंब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अधिकारी समन्वय के साथ काम करें और सुनिश्चित करें कि परियोजनाएं निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूरी हों। भू-अर्जन, वन विभाग की अनुमति या अन्य स्थानीय स्तर की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर सुलझाएं। कार्यों की गुणवत्ता और गति की नियमित निगरानी करें। आगामी सीजन को देखते हुए जल वितरण तंत्र को सुदृढ़ बनाएं। बैठक में बहुती नहर परियोजना, त्योंथर बहाव परियोजना, नईगढ़ी माइक्रो सिंचाई परियोजना सहित अन्य नहर परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई। बैठक में अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, जल संसाधन विभाग के अधिकारी एवं संबंधित परियोजनाओं के कार्यपालन यंत्री उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री ने जनता दर्शन कार्यक्रम में सुनीं समस्याएं

उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने अपने अमहिया रीवा स्थित निज निवास में जनता दर्शन कार्यक्रम में आमजनों की समस्याएं सुनीं। उप मुख्यमंत्री ने आमजनों को उनकी समस्याओं के निराकरण के लिए आश्वस्त किया। उन्होंने आमजनों की समस्याओं से संबंधित आवेदन पत्रों के निराकरण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया।

रीवा में बीहर नदी के पुल पर आई दरार

यूपी जाने वाले भारी वाहनों का रास्ता बदला, 30 अप्रैल तक पाबंदी

रीवा (नप्र)। मध्य प्रदेश से उत्तर प्रदेश (प्रयागराज और वाराणसी) को जोड़ने वाला प्रमुख मार्ग अगले कुछ हफ्तों के लिए प्रभावित रहेगा। जिला मुख्यालय से करीब 5 किमी दूर बीहर नदी पर बने 20 साल पुराने पुल में दरार आने के बाद पुलिस प्रशासन ने एहतियात के तौर पर भारी वाहनों के प्रवेश पर 30 अप्रैल तक रोक लगा दी है।

मैहर-सतना-चित्रकूट होकर गुजरेंगे वाहन- पुल बंद होने के कारण प्रयागराज और वाराणसी की ओर जाने वाले ट्रकों और भारी वाहनों को मैहर-सतना-चित्रकूट मार्ग से डायवर्ट किया गया है। अचानक बढ़े ट्रैफिक के दबाव के कारण नेशनल हाईवे-30 पर मैहर के पास मंगलवार रात को करीब एक किलोमीटर लंबा जाम लग गया। पुलिस की टीमें अब हाईवे पर ट्रैफिक सुचारू करने के लिए तैनात की गई हैं।

20 साल पुराने पुल की मरम्मत शुरू- अधिकारियों के अनुसार, इस पुल का निर्माण लगभग दो दशक पहले हुआ था। वर्तमान में लोक निर्माण विभाग और भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण की देखरेख में मरम्मत का काम चल रहा है। कलेक्टर प्रतिभा पाल द्वारा इस पूरी प्रक्रिया की निगरानी की जा रही है ताकि समय रहते रूट को दोबारा बहाल किया जा सके। पुलिस अधिकारी (रीवा) ने कहा कि पुल की सुरक्षा सबसे बड़ी प्राथमिकता है। दरार दिखने के बाद तुरंत भारी वाहनों को रोका गया है।

वनरक्षक की हत्या के बाद वनकर्मी आंदोलित

लटेरी जांच आयोग की सिफारिशें लागू करने और जान गंवाने वाले को शहीद का दर्जा देने की मांग

भोपाल (नप्र)। मुरैना में ट्रैक्टर से कुचलकर वनरक्षक की हत्या करने के मामले में सरकार की चुप्पी पर वन कर्मचारी संघ ने नाराजगी जताई है। संघ ने कहा है कि ड्यूटी पर तैनात वन कर्मचारियों को कानूनी सुरक्षा देने के साथ वनरक्षक भर्ती नियमों में संशोधन किया जाए।

माफियाओं के विरुद्ध हत्या के साथ रासुका की कार्रवाई की जाए और लटेरी जांच आयोग की रिपोर्ट को सार्वजनिक कर उसकी सिफारिशों पर अमल किया जाए।

मध्यप्रदेश वन कर्मचारी संघ ने प्रदेश में वन कर्मचारियों की समस्याओं और सुरक्षा को लेकर मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर वन अमले के लिए ठोस कदम उठाने की मांग की है। संघ के प्रदेश अध्यक्ष पंकज पांडेय ने पत्र में कहा है कि प्रदेश में वनकर्मियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

विशेष रूप से वन क्षेत्र में कार्य के दौरान कर्मचारियों की सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंता बनी हुई हैं। कई बार कर्मचारियों को बिना पर्याप्त संसाधनों और सुरक्षा व्यवस्था के जोखिम भरे हालात में काम करना पड़ता है।

शहीद का दर्जा मिले, एक करोड़ की सहायता दें- पत्र में यह भी उल्लेख किया गया है कि मुरैना में कर्मचारी के साथ हुई घटना ने पूरे वन विभाग को झकझोर दिया है। संघ ने इस घटना को गंभीर बताते हुए दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है, साथ ही भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए प्रभावी सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने पर जोर दिया है। संघ ने ड्यूटी में जान गंवाने वाले वन रक्षक को शहीद का दर्जा दिए जाने और एक करोड़ रुपए की आर्थिक मदद करने की मांग रखी है।

प्रशासनिक सुस्ती और सिस्टम की विफलता- संघ के प्रांताध्यक्ष ने कहा है कि नवंबर 2025 में तत्कालीन पीसीसीएफ एंड हॉफ ने लटेरी विदिशा न्यायिक जांच आयोग की सिफारिशों के आधार पर सरकार को सुझाव दिए थे, लेकिन वन विभाग और सरकार उन सुझावों और सिफारिशों को दबाकर बैठ गया है।

संघ ने सरकार से मांग की है कि महाराष्ट्र, ओडिसा और असम जैसे राज्यों ने अपने वनकर्मियों को कानूनी सुरक्षा दी है, जहां मजिस्ट्रेट जांच के बिना कर्मचारियों पर मुकदमा नहीं चल सकता है। अब सवाल उठने लगा है कि एमपी सरकार के लिए ग्रीन सोल्जर्स महत्वपूर्ण हैं या वन माफिया जरूरी है।

बाग माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्ष वंदना दिनेश झंवर एवं सचिव कांता बुब बनी

अध्यक्ष वंदना झंवर ने कहा कि वरिष्ठजनों के मार्गदर्शन, सहयोग से महिला मंडल को आगे बढ़ाना और समाज हित में कार्य करना प्राथमिकता

धार। बाग की माहेश्वरी समाज की महिला मंडल के निर्विरोध निर्वाचन संपन्न हुए। माहेश्वरी भवन पर आयोजित बैठक में मार्गदर्शक समिति की वरिष्ठ स्नेहलता झंवर एवं प्रादेशिक उपाध्यक्ष शकुंतला झंवर के मार्गदर्शन में चुनाव प्रक्रिया पुरी हुई। सर्वसम्मति से वंदना दिनेश झंवर को अध्यक्ष बनाया गया। सचिव कांता दिलीप बुब को बनाया गया। कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष तारा जाजू, कोषाध्यक्ष पुनम बल्देवा, प्रचार मंत्री रीता राठी , संगठन मंत्री अर्चना अगाल, मीडया प्रभारी पूजा बल्देवा, सांस्कृतिक सचिव रेणु जाजू को सर्वसम्मति से बनाया गया। इसके अलावा कार्यसमिति में 12 सदस्यों को लिया गया है ।अध्यक्ष बनने के बाद वंदना झंवर ने कहा कि सभी वरिष्ठों के मार्गदर्शन और सहयोग से महिला मंडल को और आगे बढ़ाना और समाज हित में कार्य करना प्राथमिकता रहेगी। इस अवसर पर समाज भवन पर आयोजित बैठक में पूर्व अध्यक्ष सुनिता झंवर, मिथलेश राठी ,शशि झंवर , इन्दिरा अगाल , ललिता मानधनया ,छाया झंवर ,जय श्री जाजू , पुर्व अध्यक्ष प्रीति अगाल , टीना झंवर के साथ ही महिला मंडल की सभी सदस्य उपस्थित रही ।

जिला मुख्यालय पर किसानों की समस्याओं को लेकर जिला कांग्रेस का धरना, जिले भर के कांग्रेसी जुटे

सोहागपुर। जिला कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में आज किसानों की विभिन्न समस्याओं को लेकर एक दिन का धरना प्रदर्शन का आयोजन किया गया। पीपल चौक पर जिला कांग्रेस कमेटी के नेताओं ने प्रदेश सरकार की आलोचना करते हुए किसानों की अनदेखी करने का आरोप लगाया। कांग्रेस नेताओं ने कहा कि प्रदेश सरकार किसानों का अहित कर रही है। इस धरना प्रदर्शन में जिला नर्मदापुरम के विभिन्न क्षेत्रों के कांग्रेस जनों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। धरना प्रदर्शन के उपरांत एक ज्ञापन कलेक्टर के नाम सौंपा गया। जिसमें प्रमुख गेहूँ खरीदी में देरी और किसानों की समस्याएं । किसानों का ब्याज माफ कर उन्हें ऋण मुक्त किया जाए। गेहूँ की खरीदी एमएसपी पर सुनिश्चित की जाए। किसानों को समय पर भुगतान किया जाए।खरीदी केंद्र तुरंत शुरु किए जाएं।खरीदी केंद्रों पर पर्याप्त वारदानों की व्यवस्था की जाए। गेहूँ खरीदी की लिमिट समाप्त की जाए।गेहूँ खरीदी का पेमेंट समय पर किया जाए।सोसायटी का भुगतान जिन किसानों ने नहीं किया है उनकी तारीख बढ़ाई जाए।आगामी समय में मूंग फसल की एमएसपी पर खरीदी की घोषणा भी फसल आने के पहले की जाए आदि प्रमुख मांगे थी।इस अवसर पर पूर्व विधायक गिरिजाशंकर शर्माराजकुमार उपाध्याय (केलू) प्रदेश महासचिव (म.प्र. कांग्रेस कमेटी) सोहागपुर विधानसभा चुनाव प्रत्याशी रहे पुष्पराजसिंह पटेल, जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष शिवकांत गुड्डन पांडे, जिला जनपद पंचायत सदस्य हाकमसिंह पटेल,नगर किसान कांग्रेस अध्यक्ष गणेश अहिरवार,नीरज चौधरी , इरफान खान सोहागपुर

अजय पटेल, चन्द्र गोपाल मल्लैया, जिला किसान कांग्रेस अध्यक्ष विजय बाबू चौधरी, यशवंत सिंह राजपूत , पूर्व नपाध्यक्ष अध्यक्ष संतोष मालवीय, ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष सुधीर ठाकुर,नगर कांग्रेस अध्यक्ष प्रशांत जायसवाल , सहित सैकड़ों कांग्रेसी कार्यकर्ता उपस्थित थे। कांग्रेसी नेताओं ने कहा कि सरकार नर्मदापुरम् जिले के किसानों के हक में हमारी निम्न मांगे तत्काल हल करके किसानों को राहत प्रदान करें।अन्यथा हमें उग्र आंदोलन करने को बाध्य होना पड़ेगा। जिसकी पूर्ण जिम्मेदारी प्रशासन की रहेगी ।

सोहागपुर पुलिस ने ट्रेक्टर ट्राली पर लगाए रेडियम, यातायात नियमों में हेलमेट,सीट बेल्ट का प्रयोग करें

विशेष अभियान

सोहागपुर। सोहागपुर पुलिस ने आज यातायात नियमों का पालन न करने वालों पर विशेष अभियान चलाकर लगातार कार्यवाही की जा रही है।इसी तारतम्य में ट्रेक्टर ट्राली के मालिकों को नोटिस जारी किए जा रहे हैं। जिसमें ट्रेक्टर ट्रालियों के रजिस्ट्रेशन,ट्रेक्टर बीमा,ट्रेक्टर एवं ट्रालियों पर एचएसआरपी सुरक्षा मापदंड की नंबर प्लेट लगाने की चेतावनी दी जाएगी। उल्लेखनीय है अधिकांश ट्रेक्टर ट्रालियों में रेडियम लगा न होने के कारण जिले में ही नहीं प्रदेश भर में आए दिन वीभत्स दुर्घटनाओं से नागरिक हताहत होते रहते हैं।इसी क्रम में सोहागपुर पुलिस ने ट्रेक्टर ट्रालियों में रेडियम लगाने कार्य किया है। वहीं ट्रेक्टर ट्रालियों में रजिस्ट्रेशन, क्षमता से अधिक वृऊ, हेड लाइट, चालकों के पास लाइसेंस,साऊन्ड बाक्स, ध्वनि प्रदूषण के संबंध में जागरुक किया गया। ज्ञातव्य है कि वर्तमान में रबी की फसल खरीदी केंद्रों, वेयरहाउस में जाएगी। जिसमें ट्रैक्टर ट्रालियों में पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था होने का अभियान चलाकर नागरिकों को जागरूक किया जा रहा है। यातायात के नियमों का पालन न करने वालों के खिलाफ विगत माह 216 प्रकरण में 77 हजार 800सौ की वसूली की गई है।

नगर निरीक्षक राहुल रायकवार एवं एएसआई गणेश राय ने नागरिकों से आग्रह किया है कि यातायात के नियमों का पालन करें ।खुद भी सुरक्षित रहें। दूसरों को भी सुरक्षित करें। इसके साथ ही सुरक्षित रहे। दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहने चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट का प्रयोग करें।

खुद की शादी में दूल्हे ने की फायरिंग

भोपाल (नप्र)। भोपाल के परवरिया इलाके में आयोजित एक शादी समारोह में दुल्हे ने अपने चाचा ससुर के कट्टे से हर्ष फायर कर दिया। बारातियों ने हर्ष फायरिंग की रील बनाकर उसे इंस्टाग्राम पर वायरल कर दिया। वायरल रील पुलिस के पास पहुंची तो आनन-फानन में दुल्हे और चाचा ससुर के खिलाफ केस दर्ज कर लिया।

पुलिस ने गुरुवार को चाचा ससुर को गिरफ्तार कर उसके पास से कट्टा भी जब्त कर लिया है। दुल्हा अभी फरार है, जिसकी तलाश की जा रही है।

8 अप्रैल को थी शादी- पुलिस के मुताबिक प्रॉपटी ब्रोकर का काम करने वाले मिस्बा खान की 8 अप्रैल को द डी फॉर्म हाउस में शादी थी। बारात के पहुंचते ही बारातियों ने इवेंट में चलाई जाने वाली फायर गन चलाना शुरू कर दी। इसी बीच मिस्बा के चाचा ससुर असलम खान ने अपने पास रखा कट्टा दुल्हे को दे दिया। जोश में आकर दूल्हे ने कट्टे से फायर कर दिया। इस दौरान मौके पर मौजूद लोगों ने उसकी रील बनाकर इंस्टाग्राम पर वायरल कर दी।

कलेक्टर ने की जिले में चल रहे विकास एवं निर्माण कार्यों की समीक्षा

विकास एवं निर्माण कार्यों में कोताही बर्दाश्त नहीं - कलेक्टर

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में निर्माण विभागों की बैठक आयोजित कर जिले में चल रहे निर्माण एवं विकास कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने सभी संबंधित अधिकारियों को जिले में चल रहे सभी निर्माण एवं विकास कार्यों में तेजी लाते हुए समय सीमा में कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी अपने मैदानी अमले को लक्ष्य देकर उसके अनुरूप कार्य को पूर्ण कराए। इसके साथ ही सभी निर्माण कार्यों में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए। बैठक में जिला पंचायत सीईओ श्रीमती सर्जना यादव ने भी संबंधित अधिकारियों आवश्यक दिशा निर्देश दिए। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि विकास एवं निर्माण कार्यों में किसी भी तरह की कोताही बर्दाश्त नही की जाएगी। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी कार्यो की मॉनिटरिंग करें और कार्यों को जल्द से जल्द से पूर्ण कराएं। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि किसी भी कार्य के लिए उतनी ही समय सीमा बताई जाए जितने समय मे वह कार्य पूर्ण हो सके।

बैठक में कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने आवागमन को सुगम बनाए रखने के लिए लोक निर्माण विभाग को सभी सड़कों एवं पुलों के निर्माण कार्यों को पूर्ण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देश दिए कि अतिक्रमण के कारण यदि कही सड़क निर्माण कार्य में दिक्कत आती है, तो वहां त्वरित कार्यवाही करते हुए अतिक्रमण को हटाया जाए और निर्माण कार्य पूर्ण किया जाए, ताकि आमजन को किसी तरह की परेशानी न हो।

बैठक में विभागों के कार्यों की प्रगति की समीक्षा के दौरान बताया गया कि लोक निर्माण विभाग संभाग सीहोर द्वारा कुल 67 कार्य पूर्ण किए गए हैं तथा 51 प्रगतिरत है। इसी प्रकार ग्रामीण यांत्रिकी सेवा संभाग सीहोर द्वारा 38 कार्य पूर्ण किए गए हैं तथा 36 प्रगतिरत हैं। लोक निर्माण विभाग भवन संभाग सीहोर द्वारा 17 कार्य पूर्ण एवं 23 प्रगतिरत हैं। जिला शिक्षा केंद्र सीहोर के अंतर्गत 104 कार्य प्रगतिरत हैं। इसके अलावा अन्य विभागों जैसे जल संसाधन, सेतु निर्माण, म.प्र. सड़क विकास निगम, पर्यटन विभाग एवं नर्मदा घाटी विकास विभाग में भी विभिन्न स्तरों पर कार्य प्रगति पर हैं।

बैठक में लोक निमार्ण विभाग, जल संसाधन, मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, जल निगम, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, मध्यप्रदेश भवन विकास निगम, शिक्षा विभाग, सेतु निर्माण, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण सहित अन्य विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

जहां गौशाला नहीं, वहां कांजी हाउस जैसी व्यवस्था लागू करें : कलेक्टर

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने आज आयोजित लंबित आवेदनों की समीक्षा बैठक में जिले में पशुओं के प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण निर्देश जारी किए हैं। उन्होंने कहा कि जिन ग्राम पंचायतों में गौशाला संचालित नहीं है, वहां कांजी हाउस की तर्ज पर आवश्यक व्यवस्थाएं तत्काल क्रियान्वित की जाएं। कलेक्टर ने स्पष्ट किया कि पशुधन के समुचित संरक्षण और सड़कों पर आवारा पशुओं की समस्या के समाधान के लिए यह व्यवस्था जरूरी है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि ऐसे ग्रामों की पहचान कर शीघ्र वैकल्पिक व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, जिससे पशुओं को सुरक्षित स्थान पर रखा जा सके।

संक्षिप्त समाचार

जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत भैरूंदा में की गई कुंए की सफाई

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत अनेक जल संरक्षण संबंधी गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। अभियान के तहत भैरूंदा नगर परिषद द्वारा वार्ड क्रमांक 03 में कुएं की साफ सफाई का कार्य किया गया। इसी प्रकार कचरा गाड़ी के माध्यम से वार्ड क्रमांक 13,14 और 04 में जिंगल बजाकर जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया। अभियान के तहत ग्राम खड़ीहाट में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को एफटीके से पेयजल संरक्षण तथा पंप ऑपरेटर्स को नल जल योजना संचालन का प्रशिक्षण दिया गया। ग्राम संग्रामपुर के शासकीय हाईस्कूल में बच्चों को जल एवं प्रकृति संरक्षण की शपथ दिलाई गई। इसी प्रकार भैरूंदा के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में जल संरक्षण पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें बच्चों ने पोस्टर बनाकर नागरिकों को जल एवं प्रकृति संरक्षण के प्रति जागरूक किया।

भैरूंदा में वैक्सीन लगवाने वाली बालिकाओं को प्रदान की गईं नोटबुक

सीहोर (निप्र)। भैरूंदा के शासकीय संदीपनी स्कूल में एचपीवी का टीका लगवाने वाली बालिकाओं को प्रोत्साहित करने के लिए पुस्तक मेले से दो-दो नोटबुक वितरित की गई। इसके साथ ही स्कूल द्वारा बालिकाओं को शीतल पेय(लस्सी) भी पिलवाई गई। पुस्तक मेले में आई अन्य बालिकाओं और उनके अभिभावकों को भी एचपीवी का टीका लगवाने के लिए प्रेरित किया गया।

आष्टा में दरबार रेस्टोरेंट से 02 घरेलू गैस सिलेंडर जब्त

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार जिले में एलपीजी गैस की सुचारू आपूर्ति बनाए रखने और घरेलू गैस सिलेंडरों के व्यावसायिक उपयोग एवं अनियमितताओं को रोकने के लिए आष्टा में कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी सुश्री मृगी अग्रवाल द्वारा आष्टा के विभिन्न होटलों, रेस्टोरेंट एवं गैस एजेंसियों का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान मंडी रोड़ स्थित दरबार रेस्टोरेंट पर घरेलू गैस सिलेंडर का दुरुपयोग पाए जाने पर रेस्टोरेंट से 02 घरेलू गैस सिलेंडर जब्त किए गए।

जल गंगा संवर्धन अभियान : बांसपानी में नलजल योजना का किया शुभारंभ

बैतूल (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत मंगलवार को बैतूल विकासखंड के ग्राम बांसपानी में जल जीवन मिशन द्वारा निर्मित नवीन नलजल योजना का विधिवत शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय राज्य मंत्री श्री दुर्गादास ऊइके, घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगा सज्जन सिंह ऊइके, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री हंसराज धुर्वे उपस्थित थे। केंद्रीय राज्य मंत्री श्री दुर्गादास ऊइके ने ग्रामीणों को जल का सदुपयोग करने और जल स्त्रोतों के संरक्षण में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान कार्यपालन यंत्री के निर्देशन में ग्रामीणों को पेयजल की गुणवत्ता, जल संरक्षण के महत्व तथा नलजल योजना के उचित संधारण एवं संचालन के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई। इस अवसर पर जिला एवं जनपद सदस्य, ग्राम सरपंच, विभाग के सहायक यंत्री, उपयंत्री एवं विकासखंड समन्वयक, अन्य अधिकारी-कर्मचारी सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन मौजूद रहे।

बरखेड़ी गंभीर में खेत में आग की घटना, विद्युत लाइन से आग लगने की आशंका खारिज

विदिशा (निप्र)। विदिशा जिले के ग्राम बरखेड़ी गंभीर में कृषक बृजेन्द्र सिंह के खेत में आग लगने की घटना को लेकर विद्युत विभाग ने स्पष्ट किया है कि यह आग विद्युत लाइन से नहीं लगी है। मामले में प्रबंधक, विदिशा (ग्रामीण) उपसंभाग द्वारा मौके का निरीक्षण कर विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, संबंधित खेत के पास से गुजर रही 11 के.व्ही. झिरनिया पंप फीडर लाइन का तार टूटा हुआ पाया गया था, जिसके आधार पर प्रारंभिक तौर पर आग लगने की वजह विद्युत लाइन को माना जा रहा था। हालांकि विभागीय जांच में यह संभावना खारिज कर दी गई है। प्रतिवेदन के अनुसार, 5 और 6 अप्रैल 2026 की दरम्यानी रात लगभग 1.18 बजे फीडर को चालू करते समय तकनीकी खराबी (ट्रिपिंग) आने पर उसे तत्काल बंद कर दिया गया था। इसके बाद सुबह करीब पांच बजे तक उक्त फीडर पूरी तरह बंद रहा और उसमें किसी प्रकार की विद्युत आपूर्ति नहीं की गई। इसी दौरान सुबह लगभग पांच बजे आग लगने की घटना सामने आई। चूंकि उस समय फीडर में बिजली प्रवाहित नहीं हो रही थी, इसलिए विद्युत लाइन से आग लगने की संभावना नहीं पाई गई। जांच में यह भी सामने आया कि जिस खेत में आग लगी, वहां की फसल पहले ही काटी जा चुकी थी और खेत में नरवाई (फसल अवशेष) मौजूद थी।

पीएम आवास योजना के तहत अपूर्ण आवासों को शीघ्र पूरा करवाया जाना सुनिश्चित करें सभी सीएमओ: कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना

स्वच्छता सर्वेक्षण के लिए प्रत्येक घटकों के लिए अतिरिक्त प्रयास करें सभी निकाय कलेक्टर

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना ने नगरीय निकायों की समीक्षा करते हुए उपस्थित मुख्य नगर पालिका अधिकारियों को पीएम आवास योजना 1.0 एवं 2.0, स्वच्छता सर्वेक्षण, सर्वोच्च न्यायालय द्वारा आवारा श्वानों के प्रबंधन के लिए जारी दिशा निर्देशों के पालन तथा समस्त नगरीय निकायों में ईऑफिस के माध्यम से फाइलों के परिचालन के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान संयुक्त कलेक्टर एवं पीओ डूडा श्री देवेंद्र सिंह सहित समस्त सीएमओ एवं अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री आवास योजना 1.0 के तहत अपूर्ण आवास शीघ्र पूर्ण किए जाएं : कलेक्टर ने प्रधानमंत्री आवास योजना 1.0 के अंतर्गत नगरीय निकायों द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। कलेक्टर ने योजना के तहत पूर्व में स्वीकृत आवासों की संख्यात्मक जानकारी, पूर्ण एवं अपूर्ण आवासों की स्थिति तथा अपूर्णता के कारणों सहित विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने निर्देशित किया कि जिन आवासों

की राशि हितग्राहियों को हस्तांतरित की जा चुकी है, लेकिन निर्माण कार्य अभी तक प्रारंभ नहीं हुआ है, ऐसे मामलों में संबंधित हितग्राहियों को नोटिस जारी कर नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित की जाए। उन्होंने सभी सीएमओ को निर्देशित किया कि योजना के प्रत्येक बिंदु पर गंभीरता से कार्य करते हुए नियमित मॉनिटरिंग सुनिश्चित करें। साथ ही 30 जून की समय-सीमा निर्धारित कर ठोस कार्ययोजना तैयार की जाए। समीक्षा के दौरान कलेक्टर ने प्लिंथ स्तर, छत स्तर, अपूर्ण, आरआरसी तथा अप्रारंभ आवासों की पृथक-पृथक जानकारी तैयार कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने सभी मुख्य नगरपालिका अधिकारियों (सीएमओ) को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता पर करते हुए अपूर्ण आवासों को शीघ्र पूर्ण कराया जाना सुनिश्चित करें। इसके अतिरिक्त कलेक्टर ने आरआरसी से संबंधित सभी प्रकरणों में राजस्व अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर उनका समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए। साथ ही पीएम आवास योजना 2.0 के तहत भी पट्टा वितरण की कार्यवाही ने गति लाई जाए एवं प्राप्त आवेदनों के विरुद्ध पात्र आवेदनों को अगले स्तर पर प्रेषित करें एवं जियो टैगिंग के लिए लंबित आवेदनों में भी शीघ्र ही जियो टैग किया जाना सुनिश्चित करें।

स्वच्छता सर्वेक्षण में सभी निकाय टॉप 10 में स्थान बनाने पर करें फोकस : कलेक्टर द्वारा स्वच्छता सर्वेक्षण के तहत नगरीय निकायों द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा करते हुए समस्त मुख्य नगरपालिका अधिकारियों (सीएमओ) को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। कलेक्टर ने निर्देशित किया कि एमआईएस पोर्टल पर की गई प्रविष्टियों की जानकारी सहित विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए, ताकि कार्यों की वास्तविक स्थिति का सटीक आकलन किया जा सके। कलेक्टर ने 'सुपर 75' के अंतर्गत चिन्हित निकायों को विशेष रूप से निर्देशित किया कि वे टॉप 10 में स्थान सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक निर्धारित घटक में अतिरिक्त प्रयास करें। उन्होंने कहा कि सभी सीएमओ प्रत्येक बिंदु का गहन परीक्षण कर कमियों को दूर करें और बेहतर प्रदर्शन सुनिश्चित करें। समीक्षा के दौरान कलेक्टर ने आश्वस्त किया कि स्वच्छता सर्वेक्षण के लिए नगरीय निकायों को आवश्यक सहयोग एवं संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगे। इस हेतु परियोजना अधिकारी डूडा द्वारा हर संभव सहायता प्रदान की जाएगी।

आवारा श्वानों के प्रबंधन के लिए की जा रही कार्यवाही में गति लाएं सभी सीएमओ

कलेक्टर ने आवारा श्वानों के प्रबंधन की मानक संचालन प्रक्रिया के तहत नगरीय निकायों द्वारा की जा रही कार्यवाही की समीक्षा करते हुए निर्देशित किया कि जिन निकायों में आवारा श्वान प्रबंधन हेतु टेंडर प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है, वहां शेल्टर होम में स्टेरलाइजेशन, वैक्सीनेशन सहित सभी निर्धारित व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं। कलेक्टर ने यह भी निर्देश दिए कि शेल्टर होम पर तैनात किए जाने वाले चौकीदारों को आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। साथ ही प्रत्येक निकाय में एक नोडल अधिकारी नियुक्त कर शेल्टर होम का नियमित निरीक्षण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने निर्देशित किया कि सभी नगरीय निकाय अपने-अपने क्षेत्रों में संवेदनशील स्थानों का चिन्हांकन करें, जहां आवारा श्वानों की समस्या अधिक है, ताकि वहां विशेष ध्यान दिया जा सके। समीक्षा के दौरान कलेक्टर ने स्पष्ट निर्देश दिए कि जिन निकायों में अभी तक टेंडर प्रक्रिया पूर्ण नहीं हुई है, वे शीघ्रता से इस प्रक्रिया को पूरा करें।

बेल नदी उद्गम पर 'जल स्रोत सेवा समागम', जल संरक्षण का दिया संदेश

बैतूल (निप्र)। बेल नदी के उद्गम स्थल बेलमंडई (पंखा) सरोवर पर जल गंगा संवर्धन अभियान के द्वितीय चरण अंतर्गत 'जल स्रोत सेवा समागम' कार्यक्रम का आयोजन मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद, बैतूल द्वारा किया गया। विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में उद्गम स्थल का पूजन मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष (राज्यमंत्री दर्जा) श्री मोहन नागर के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित जनसमूह ने उद्गम स्थल पर श्रमदान कर स्वच्छता अभियान चलाया तथा जल संरक्षण का सामूहिक संकल्प लिया।

यह आयोजन नवांकुर संस्था, माँ रेणुका पर्यावरण विकास समिति (बोरी खुर्द), अभिनव समाज कल्याण संगठन, तरुण शक्ति समिति एवं डॉ. जगन्नाथ यदुवंशी आरोग्य वेलफेयर फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नदी अनुभूति, उद्गम क्षेत्र की साफ-सफाई, नागदेव पूजन, बरगद, पीपल एवं बेल जैसे पवित्र वृक्षों का पूजन, मानव श्रृंखला निर्माण एवं श्रमदान जैसी गतिविधियों के माध्यम से जनजागरूकता का संदेश दिया गया। साथ ही जल मंदिर (प्याऊ) का शुभारंभ भी किया गया। जल चौपाल को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री नागर ने कहा कि नदियों की स्वच्छता और सतत प्रवाह धरती के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत

आवश्यक है। जिस प्रकार शरीर में रक्त की शुद्धता आवश्यक होती है, उसी प्रकार नदियों का स्वच्छ और अविरल रहना जरूरी है। उन्होंने जल संरक्षण के विभिन्न उपायों पर विस्तार से चर्चा करते हुए स्थानीय समुदाय की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम में जिला समन्वयक प्रिया चौधरी ने जल और प्रकृति के बीच संबंध को स्पष्ट करते हुए जल संरक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया। इस अवसर पर नरेन्द्र गडेकर, लखन यादव, दिलीप माथनकर, धर्मेंद्र गोचरे, जोहरी वाडीवा, संजय माथनकर, श्रीमती रामवती भलावी (सरपंच), दीप सिंह सिसोदिया, बबीता सोलंकी (रोजगार सहायक), ज्योति नागले, भीमराव माथनकर सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं ग्रामीणजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में ब्लॉक समन्वयक अरविंद माथनकर, ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति के सदस्य, नवांकुर संस्थाओं के प्रतिनिधि, सीएमसीएलडीपी के विद्यार्थी एवं बड़ी संख्या में ग्रामीणों की सहभागिता रही। इस आयोजन के माध्यम से जल संरक्षण, पर्यावरण संतुलन एवं सामूहिक सहभागिता का प्रभावी संदेश दिया गया।

अपर कलेक्टर ने उपार्जन केन्द्रों का किया निरीक्षण, व्यवस्थाओं को दुरुस्त रखने के निर्देश

विदिशा (निप्र)। विदिशा जिले में रबी उपार्जन कार्य को सुचारू एवं पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर द्वारा विभिन्न उपार्जन केन्द्रों एवं गोदामों का निरीक्षण किया गया। इस दौरान उन्होंने चना एवं मसूर उपार्जन के लिए संचालित पठारी केन्द्र का जायजा लेते हुए वहां की व्यवस्थाओं का बारीकी से अवलोकन किया। निरीक्षण के दौरान अपर कलेक्टर ने संबंधित सोसाइटी प्रबंधकों को निर्देशित किया कि किसानों से उपार्जन की प्रक्रिया में किसी प्रकार की असुविधा न हो। तौल, परिवहन, भंडारण एवं भुगतान से जुड़ी सभी व्यवस्थाएं समयबद्ध एवं सुव्यवस्थित तरीके से सुनिश्चित की जाएं। उन्होंने कहा कि उपार्जन केन्द्रों पर पारदर्शिता बनाए रखना सर्वोच्च प्राथमिकता है। श्री डामोर ने तारा गोदाम एवं एमएसडी गोदाम भादरबाड़ा का भी निरीक्षण किया। यहां भंडारित उपज की गुणवत्ता, सुरक्षा एवं रिकॉर्ड संधारण की स्थिति की समीक्षा की गई। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि गोदामों में साफ-सफाई, सुरक्षा व्यवस्था एवं उचित रख-रखाव सुनिश्चित किया जाए। इसके अतिरिक्त अन्नपूर्णा वेयरहाउस चक्रपटनी एवं राधाकृष्णन वेयरहाउस का निरीक्षण करते हुए उन्होंने भंडारण क्षमता, स्टैकिंग व्यवस्था एवं निगरानी प्रणाली का जायजा लिया। उन्होंने संबंधित प्रबंधकों को निर्देशित किया कि सभी मानकों का पालन करते हुए उपज का सुरक्षित भंडारण किया जाए, ताकि किसी प्रकार की क्षति न हो। अपर कलेक्टर ने स्पष्ट किया कि शासन की मंशा के अनुरूप किसानों को समय पर भुगतान एवं सुविधाएं उपलब्ध कराना प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी है। निरीक्षण के दौरान पाई गई कमियों को तत्काल सुधारने के निर्देश दिए निरीक्षण के दौरान विदिशा एसडीएम श्री क्षितिज शर्मा जिला आपूर्ति अधिकारी श्री अनिल तंतुवाय समेत अन्य विभागों के जिला व खंड स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

विश्व स्वास्थ्य दिवस" पर विधिक साक्षरता शिविर का हुआ आयोजन

हरदा (निप्र)। म.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जबलपुर के निर्देशानुसार एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश व अध्यक्ष श्री अरविंद रघुवंशी के मार्गदर्शन में मंगलवार को ''विश्व स्वास्थ्य दिवस'' के उपलक्ष्य में मुख्यमंत्री संजीवनी पॉली क्लिनिक, दूध डेयरी हरदा एवं वार्ड क्रं. 11 आंगनवाड़ी केन्द्र क्रं. 21 में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में उपस्थित जिला विधिक सहायता अधिकारी श्री सौरभ कुमार दुबे ने उपस्थित जनों को बताया कि विश्व स्वास्थ्य दिवस हर साल 7 अप्रैल को मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण आयोजन है, जिसका उद्देश्य वैश्विक स्वास्थ्य मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। यह अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने और स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के महत्व पर प्रकाश डालता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा आयोजित यह दिवस दुनिया भर के लोगों को प्रभावित करने वाली प्रमुख स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान पर केंद्रित है। इस दिवस का मुख्य लक्ष्य बीमारियों की रोकथाम, संतुलित जीवनशैली और सभी के लिए सुलभ स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना है।

श्री दुबे ने बताया कि वर्तमान दौर में बदलती जीवनशैली के कारण बढ़ रहे मधुमेह, हृदय रोग और मानसिक तनाव जैसे मुद्दों पर भी इस वर्ष विशेष ध्यान दिया जा रहा है। आम जनता से अपील की गई है कि वे नियमित व्यायाम, पोषक आहार और वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित स्वास्थ्य सलाहों को अपनाकर एक स्वस्थ भविष्य के निर्माण में योगदान दें।

नगद इनाम की घोषणा

विदिशा (निप्र)। पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी के द्वारा थाना कोतवाली विदिशा में दर्ज अपराध क्रमांक 12/2026 की विभिन्न धाराओ के फरार आरोपियों किसन पुत्र दिलीप पारदी और कालू शिवा पुत्र वाला पारदी निवासी हड्डी मील गुना, राजवीर पुत्र महेन्द्र पारदी निवासी ग्राम बीलाखेडी थाना धरनावदा जिला गुना ग्राम गढला गिर्द थाना बजरंगगढ जिला गुना, करण पुत्र राजमल पारदी, अभिषेक पुत्र विनोद पारदी, रामसिंह पुत्र गजराज पारदी, धनराज पुत्र नाथूराम पारदी एवं भगत पुत्र रूस्तम पारदी सर्व निवासीगण ग्राम बीलाखेडी थाना धरनावदा जिला गुना की सूचना देने वालो को क्रमशः 1250-1250 रूपए (प्रत्येक पर) की नगद राशि देने की उद्घोषणा की है।

शासकीय एकलव्य महिला आईटीआई, बैतूल में हार्टफुलनेस ध्यान प्रशिक्षण शिविर आयोजित

बैतूल (निप्र)। शासकीय एकलव्य महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था, बैतूल में हार्टफुलनेस संस्था के तत्वावधान में समस्त स्टाफ एवं प्रशिक्षणार्थियों के लिए तीन दिवसीय ध्यान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर श्री कमलेश डी. पटेल (दाजी) के मार्गदर्शन में संचालित संस्था की गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में हार्टफुलनेस ध्यान प्रशिक्षक श्री विनोद कुमार जेठवा उपस्थित रहे। साथ ही हार्टफुलनेस संस्था से श्री कमल अग्रवाल एवं श्री राजेंद्र सिंह परिहार विशेष रूप से उपस्थित हुए। कार्यक्रम के दौरान श्री कमल अग्रवाल ने हार्टफुलनेस संस्था का परिचय देते हुए कहा कि 'हार्टफुलनेस एक सरल एवं प्रभावी ध्यान पद्धति है, जो जीवन में शांति, संतुलन और

सकारात्मकता लाने का सशक्त माध्यम है।' वहीं श्री राजेंद्र सिंह परिहार ने अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए बताया कि ध्यान के नियमित अभ्यास से उन्हें स्वास्थ्य लाभप्राप्त हुआ तथा जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आए। मुख्य अतिथि श्री विनोद कुमार जेठवा ने अपने उद्बोधन में ध्यान के गूढ़ महत्व को समझाते हुए बताया कि हार्टफुलनेस ध्यान का लक्ष्य हृदय के माध्यम से उच्चतर 'स्व' या स्रोत से मिलन है, और यही योग का वास्तविक अर्थ एवं उद्देश्य है। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि केवल समान धर्मी के साथ एकत्व प्राप्त करने के लिए मनुष्य को पहले स्वयं को उस स्रोत के अनुरूप बनाना आवश्यक है। साथ ही उन्होंने तीन दिवसीय प्रशिक्षण में दी जाने वाली ध्यान की सरल एवं प्रभावी विधियों की जानकारी भी दी।

संस्था की ओर से श्री रेवाशंकर पंडाग्रे ने बताया कि 'हार्टफुलनेस संस्था के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को न केवल ध्यान का प्रशिक्षण मिल रहा है, बल्कि उनके व्यक्तित्व, अनुशासन एवं मानसिक संतुलन में भी सकारात्मक विकास हो रहा है। यह पहल विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है।' संस्था के प्राचार्य श्री अजीश पंद्रे ने हार्टफुलनेस संस्था का आभार व्यक्त करते हुए बताया कि हार्टफुलनेस संस्था के साथ हुए एमओयू के अंतर्गत फ्लोरीकल्चर ट्रेड की प्रशिक्षणार्थियों को ऑन जॉब ट्रेनिंग प्रदान की गई तथा इसके पश्चात हैदराबाद स्थित कान्हा शांतिवनम में रोजगार प्राप्त होने से संस्था को विशेष ख्याति मिली है। इस अवसर पर श्री रेवाशंकर पंडाये, श्रीमती पुष्पा नागले, श्रीमती विनीता पाटिल, श्री रामनारायण गंगारे, श्री महेश चौधरी, श्री दिलीप बेले, श्री सोमू मराठा, कु. तारिणी यादव, कु. सुषमा साहू एवं श्रीमती शारदा साहू श्रीमती भारती यादव सहित संस्था के समस्त स्टाफ एवं प्रशिक्षणार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं स्टाफ के मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देना रहा, जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

मप्र-राजस्थान के बीच नई रेल लाइन

प्रदेश के मुगलिया हाट, दुराहा व श्यामपुर जैसे स्टेशनों पर पहली बार पहुंचेगी ट्रेन

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के रेल यात्रियों को 2026 के अंत तक एक बड़ी सौगात मिलने जा रही है। भोपाल-रामगंज मंडी नई रेल लाइन परियोजना तेजी से अंतिम चरण में पहुंच रही है, जिसके पूरा होने पर प्रदेश के कई हिल और दूरदराज इलाकों में पहली बार ट्रेन पहुंचेगी और राजस्थान से सीधा रेल संपर्क स्थापित होगा।हाल ही में कोटा मंडल के अंतर्गत खिलचीपुर-राजगढ़ सिटी (17.8 किमी) रेलखंड पर रेल संरक्षा आयुक्त द्वारा विस्तृत निरीक्षण किया गया। इस दौरान 130 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से सफल स्पीड ट्रायल भी किया गया। यह ट्रायल इस रूट पर जल्द यात्री सेवा शुरू होने का संकेत माना जा रहा है।

कितना काम हुआ, कितना बाकी

करीब 276 किलोमीटर लंबी इस रेल परियोजना में अब तक 187 किलोमीटर का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। इसमें शेष 89 किलोमीटर का कार्य मार्च 2026 तक वित्तीय वर्ष 2026-27 से पहले पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

पहली बार रेल नेटवर्क से जुड़ेंगे कई स्टेशन

इस परियोजना के तहत मध्यप्रदेश के राजगढ़ और सीहोर जिले के कई स्टेशन पहली बार रेल नक्शे पर आएंगे। इनमें पिपलहेड़ा, सोनकच्छ, नरसिंहगढ़, जमुनियागंज, कुरावर, श्यामपुर, दुराहा, झारखेड़ा, मुगलियाहाट, आदि शामिल हैं। इन क्षेत्रों के लोग अब तक सड़क मार्ग पर निर्भर थे, लेकिन रेल सेवा शुरू होने के बाद भोपाल और राजस्थान के शहरों तक पहुंच आसान हो जाएगी।

दूरी 100 किमी घटेगी, समय में 2-3 घंटे की बचत

नई रेल लाइन शुरू होने के बाद भोपाल-कोटा के बीच करीब 100 किलोमीटर दूरी कम होगी और यात्रियों का 2 से 3 घंटे समय बचेगा।

राजगढ़ और सीहोर के कई इलाके पहाड़ी और ग्रामीण हैं, जहां रेल सुविधा नहीं थी। नई लाइन इन क्षेत्रों को मुख्यधारा से जोड़ेगी, जिससे रोजगार, व्यापार और शिक्षा के नए अवसर खुलेंगे।रेलवे अधिकारियों का कहना है कि परियोजना पूरी होने के बाद मध्यप्रदेश और राजस्थान के बीच कनेक्टिविटी मजबूत होगी और क्षेत्रीय विकास को नई गति मिलेगी।

पहली बार रेल नेटवर्क से जुड़ेंगे कई स्टेशन, यह रहेगा संभावित किराया स्लीपर कैटेगिरी का

मुगलिया हाट	100-120 रुपए
झारखेड़ा	120-140 रुपए
दुराहा	130-150 रुपए
श्यामपुर	150-170 रुपए
जमुनियागंज	190-210 रुपए
कुरावर	170-190 रुपए
नरसिंहगढ़	210-240 रुपए
सोनकच्छ	240-270 रुपए
पिपलहेड़ा	280-320 रुपए
ब्यावरा	320-360 रुपए

भोपाल रेल मंडल के प्रवक्ता नवल अग्रवाल ने बताया कि-इस परियोजना के तहत मध्यप्रदेश के राजगढ़ और सीहोर जिले के कई स्टेशन पहली बार ट्रेन पहुंचेगी, इस दौरान 130 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से सफल स्पीड ट्रायल भी किया गया। 2026 तक वित्तीय वर्ष 2026-27 से पहले पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

प्रदेश की सड़कों से हटेंगी 899 पुरानी कमर्शियल बसें

खटारा बसों में जबलपुर पहले नंबर पर, हाईकोर्ट ने कहा- सरकार को परिवहन नीति बनाने का अधिकार

जबलपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश की सड़कों से जल्द ही 15 साल पुरानी कमर्शियल बसें हटेंगी। सरकार के इस आदेश पर हाईकोर्ट ने भी मुहर लगा दी है। इस आदेश के बाद उन बस ऑपरेटर्स को बड़ा झटका लगा है, जिन्होंने याचिका दायर की थी।

15 साल की उम्र पार कर चुकी 899 बसें- मध्यप्रदेश में 899 ऐसी बसें दौड़ रही हैं, जिन्होंने अपनी 15 साल की उम्र पार कर ली है। ये बसें खटारा हो चुकी हैं, इसके बावजूद भी प्रदेश के शहरों के बीच सवारियां ढोने का काम कर रही हैं। मामले में सरकार ने सख्त कदम उठाया तो बस ऑपरेटर्स ने हाईकोर्ट में याचिका दायर की, जिसे कोर्ट ने खारिज कर दिया। 14 नवंबर 2025 को शासन ने आदेश जारी किया था, जिसे हाईकोर्ट में चुनौती दी गई थी।

खटारा बसों में जबलपुर नंबर 1 पर- जानकारी के मुताबिक, सबसे ज्यादा खटारा बसें जबलपुर में हैं, जबकि सबसे कम रीवा संभाग में चल रही हैं। परिवहन विभाग के सचिव मनीष सिंह ने आयुक्त विवेक शर्मा को एक पत्र लिखकर इन सभी बसों की सूची सौंप दी है।

अब इन बसों पर जल्द ही कार्रवाई होगी। सरकार के इस आदेश के बाद बस संचालकों ने दलील दी है कि जब उनकी बसों को परमिट और फिटनेस सर्टिफिकेट दिया गया था, तब उनकी उम्र 15 साल नहीं हुई थी।

मध्यप्रदेश में रोजाना 11,000 वैध बसें सड़कों पर

दौड़ रही हैं। एक बस में करीब 40 से 50 यात्री रोज सफर करते हैं, यानी लगभग 4.5 लाख यात्री बस से सफर करते हैं।

एमपी के कई जिलों के बस ऑपरेटर्स ने याचिका दायर की- भोपाल से बस ऑपरेटर विकास भार्गव समेत आरजे फौजदार बस सर्विस, रुकमनी राय, ममता रघुवंशी, सुनीता जैन, प्रहलाद भक्त यादव, दमोह जिला बस ऑपरेटर यूनियन (दमोह), हेमवती चौरासिया, शेख नावेद और मोहम्मद अमीर ने याचिका दायर की थी।

बस ऑपरेटर्स की सभी 10 याचिकाएं खारिज

जस्टिस विशाल मिश्रा की सिंगल बेंच ने 14 नवंबर 2025 के मप्र शासन के आदेश को चुनौती देने वाली बस ऑपरेटर्स की सभी 10 याचिकाएं खारिज कर दी हैं। इस फैसले के बाद अब प्रदेश में 15 साल से अधिक पुराने कमर्शियल वाहनों के खिलाफ कार्रवाई का रास्ता पूरी तरह साफ हो गया है।

जस्टिस विशाल मिश्रा की बेंच ने 27 फरवरी 2026 को सुनवाई पूरी होने के बाद फैसला सुरक्षित रखा था। कोर्ट ने कहा कि जब नियम और संशोधन पहले ही वैध ठहराए जा चुके हैं, तो उनके आधार पर जारी आदेश को अवैध नहीं माना जा सकता। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि राज्य सरकार को परिवहन नीति और स्टेज कैरिज परमिट से जुड़े निर्णय लेने का पूरा अधिकार है। इसी आधार पर अदालत ने सभी 10 याचिकाएं खारिज कर दीं। याचिकाकर्ताओं का कहना है कि अब वे हाईकोर्ट की डबल बेंच में इस नियम को चुनौती देंगे।

एसीएस की तर्ज पर डीजी, एडीजी बने संभाग प्रभारी

वरुण कपूर भोपाल, उपेंद्र जैन उज्जैन, पंकज श्रीवास्तव जबलपुर संभाग प्रभारी

भोपाल (नप्र)। राज्य सरकार ने अपर मुख्य सचिवों की तर्ज पर स्पेशल डीजी और एडीजी स्तर के अधिकारियों को संभागीय स्तर पर कानून व्यवस्था की समीक्षा की जिम्मेदारी सौंपी है। यह अधिकारी रेंज स्तर पर पदस्थ आईजी के अलावा संभागों की कानून व्यवस्था की निगरानी करेंगे। डीजी वरुण कपूर को

भोपाल, उपेंद्र जैन को उज्जैन तथा स्पेशल डीजी पंकज श्रीवास्तव को जबलपुर संभाग का प्रभारी बनाया गया है। यह व्यवस्था प्रदेश में यूसीसी लागू करने के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के फैसले के बाद प्रभावी की गई है।

यूसीसी लागू होने के पहले सुपरविजन और मॉनिटरिंग के लिए नियुक्तियां- गृह विभाग द्वारा यूसीसी (समान नागरिक संहिता) लागू करने की तैयारियों के बीच प्रदेश के सभी संभागों में डीजी, स्पेशल डीजी और एडीजी स्तर के अधिकारियों को संभागीय प्रभारी नियुक्त किया गया है। दरअसल मंगलवार को कैबिनेट की बैठक में यूसीसी लागू करने को लेकर सीएम ने गृह विभाग को निर्देश दिए। यूसीसी का वर्ग विशेष की ओर से विरोध होना तय है और आने वाले दिनों में कानून व्यवस्था पर इसका असर पड़ेगा। इसलिए गृह विभाग ने रेंज में पदस्थ आईजी के ऊपर संभागीय स्तर पर एडीजी, स्पेशल डीजी और डीजी स्तर के अधिकारियों की जिम्मेदारी तय कर दी है।

8 अप्रैल को जारी आदेश में कहा गया है कि मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में संभाग स्तर पर कानून व्यवस्था और पुलिस के कामों की समीक्षा के सुपरविजन और मॉनिटरिंग के लिए यह दायित्व सौंपे गए हैं। इसमें पहले से इंदौर, ग्वालियर, रीवा संभाग के लिए आईपीएस अफसरों को संभागीय प्रभारी का दायित्व सौंपा गया है।

इन संभाग में पहले से मौजूद अधिकारी भी अपना काम करते रहेंगे। इसके अलावा सात संभागों के लिए नए अधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी गई है।

आईपीएस अधिकारियों को सौंपी गई संभागवार जिम्मेदारी

क्र.	आईपीएस अधिकारी	वर्तमान पद	आवंटित संभाग
1.	वरुण कपूर	डीजी जेल	भोपाल
2.	आदर्श कटियार	स्पेशल डीजी प्रशासन	इंदौर
3.	उपेंद्र कुमार जैन	डीजी ईओडब्ल्यू	उज्जैन
4.	प्रज्ञा ऋचा श्रीवास्तव	डीजी होमगार्ड	ग्वालियर
5.	पंकज कुमार श्रीवास्तव	स्पेशल डीजी सीआईडी	जबलपुर
6.	अनिल कुमार	स्पेशल डीजी महिला सुरक्षा	रीवा
7.	जी अखेतो सेमा	स्पेशल डीजी जेल	चंबल
8.	रवि कुमार गुप्ता	स्पेशल डीजी रेल	नर्मदापुरम
9.	अनंत कुमार सिंह	स्पेशल डीजी एमपी पुलिस हाउसिंग कार्पोरेशन	सागर
10.	राजाबाबू सिंह	एडीजी ट्रेनिंग	शहडोल

आईएएस अधिकारियों को सौंपी गई संभागवार जिम्मेदारी

क्र.	आईएएस अधिकारी का नाम	आवंटित संभाग
1.	डॉ. राजेश राजौरा	उज्जैन
2.	अशोक बर्णवाल	ग्वालियर
3.	मनु श्रीवास्तव	चम्बल
4.	संजय दुबे	जबलपुर
5.	नीरज मंडलोई	नर्मदापुरम
6.	अनुपम राजन	इंदौर
7.	संजय कुमार शुक्ल	भोपाल
8.	रश्मि अरुण शमी	रीवा
9.	दीपाली रस्तोगी	सागर
10.	शिवशेखर शुक्ला	शहडोल

प्रदेश में अब मौसम तेजी से बदलेगा, तापमान में एकदम से उछाल आने की आशंका

भिंड में ओलावृष्टि, इंदौर-सागर में 44 किमी की रफ्तार से चली आंधी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के मौसम में इन दिनों बड़े बदलाव देखने को मिल रहे हैं। पिछले 24 घंटों में प्रदेश के कई हिस्सों में झमाझम बारिश, ओलावृष्टि और तेज आंधी ने दस्तक दी है। रीवा और शहडोल संभाग में पारा 5 डिग्री तक लुढ़क गया है, जिससे लोगों को गर्मी से मामूली राहत मिली है। हालांकि, मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि यह राहत लंबी नहीं टिकेगी और आने वाले 5 दिनों में तापमान में 4 से 6 डिग्री सेल्सियस की भारी बढ़ोतरी होने वाली है।

भिंड में गिरे ओले, 44 किमी की रफ्तार से चली हवाएं- मौसम विभाग द्वारा जारी बुलेटिन के अनुसार एमपी में पिछले 24 घंटों में भिंड जिले में ओलावृष्टि दर्ज की गई। वहीं, इंदौर, सागर और नर्मदापुरम में 44 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से झोंकेदार हवाएं चलीं। प्रदेश के जबलपुर, अमरकंटक और रौन समेत कई इलाकों में हल्की से मध्यम वर्षा दर्ज की गई है।

तापमान में आई गिरावट, अब बढ़ेगा पारा- प्रदेश में बीते 9 दिन से मौसम और तापमान में उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा था। पिछले 24 घंटों में जहां रीवा और शहडोल संभागों में झमाझम बारिश और भिंड जिले में ओलावृष्टि दर्ज की गई, वहीं प्रदेश के कई हिस्सों में तापमान में भारी गिरावट आई है। हालांकि, मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि, यह राहत अस्थायी है और आने वाले 5 दिनों में पारा 4 से 6 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ने वाला है।

इन जिलों में दर्ज हुई बारिश- आईएमडी से मिली जानकारी अनुसार भिंड, मुरैना, शिवपुरी, इंदौर और जबलपुर समेत कई जिलों में गरज-चमक के साथ बौछारें पड़ीं। भिंड जिले में ओलावृष्टि भी दर्ज की गई। तापमान की बात करें तो रीवा और शहडोल संभाग में अधिकतम तापमान में 5.4 डिग्री तक की बड़ी गिरावट देखी गई। वहीं भोपाल और उज्जैन में न्यूनतम तापमान भी काफी नीचे गिरा है। मौसम विज्ञानी भोपाल डॉ. अरूण शर्मा ने कहा प्रदेश में अगले 4 दिनों तक कोई नया सिस्टम नहीं है, इस कारण मौसम शुष्क और साफ रहेगा। अगले 4-5 दिन में तापमान 6 डिग्री तक बढ़ सकता है

राजगढ़ सबसे ठंडा और खंडवा सबसे गर्म- प्रदेश में सबसे कम न्यूनतम तापमान राजगढ़ जिले में 14.0 डिग्री सेंटीग्रेड दर्ज किया गया, जबकि सबसे अधिक तापमान खंडवा 36.5 डिग्री दर्ज किया गया। यह दोनों शहर सबसे ठंडे और सबसे गर्म रहे।

अगले 24 घंटों में यहां बारिश की संभावना- मौसम विभाग से मिली जानकारी अनुसार अगले 24 घंटों में अनूपपुर, डिंडोरी, सिवनी, मंडला और बालाघाट जिलों में कहीं-कहीं वर्षा या गरज-चमक के साथ बौछारें पड़ सकती हैं। इन क्षेत्रों में 30-40 किमी/घंटा की रफ्तार से तेज हवाएं चलने और बिजली गिरने की भी संभावना है।

बुरहानपुर जिले का बोरसर गांव में गलती से भी मत बकना गाली, 'संस्कारी गांव' के नियम जानें नहीं तो..

500 रुपए जुर्माना, एक घंटे तक गांव में झाड़ू

बुरहानपुर (नप्र)। मध्य प्रदेश के बुरहानपुर जिला मुख्यालय से 20 किमी दूर बोरसर गांव है। इस गांव की आबादी 6 हजार है। गांव ने गाली-गलौच मुक्त होने का गौरव हासिल किया है। बोरसर गांव में अगर कोई व्यक्ति गाली देता है तो उस पर 500 रुपए का जुर्माना लगाया जाएगा। साथ ही एक घंटे तक गांव में झाड़ू लगानी होगी।

गांव के लोगों ने गाली मुक्त बनाने का उठाया बीड़ा- दरअसल, ग्राम पंचायत बोरसर के सरपंच अंतरसिंह, उपसरपंच विनोद शिंदे सहित अभिनेता अश्विन पाटिल ने गांव को गाली मुक्त बनाने का बीड़ा उठाया है। सबों ने मिलकर गांव में संस्कार नवाचार की नींव रखी है, पूरे गांव में कही भी गाली गलौच करते पाए गए तो खैर नहीं होंगी। यह नियम सभी लोगों के लिए बराबर है।

पढ़ाई लिखाई के लिए पुस्तकालय खोला गया - वहीं, गांव में गाली देने पर सजा का भी प्रावधान किया गया है। गाली-गलौज करने पर 500 रुपए का जुर्माना लगेगा। साथ ही एक घंटे तक गांव में झाड़ू लगाने की सजा है। यह पहल युवाओं को सभ्य और जागरूक बनाने के लिए की गई है। साथ ही उनकी पढ़ाई लिखाई के लिए पुस्तकालय खोला गया है। यहां कर्म, धर्म सहित जनरल नॉलेज और स्कूली पाठ्यक्रम की किताबों का खजाना उपलब्ध कराया है।

गांव में चार जगहों पर फ्री वाई-फाई की सुविधा- इसके अलावा गांव में इंटरनेट क्रांति लाई गई है, गांव में 4 स्थानों पर फ्री वाई-फाई स्थापित किया है। इसके बाद गांव इंटरनेट कनेक्शन से जुड़ गया है, हर व्यक्ति फ्री इंटरनेट का लाभ उठा रहा है। इसके अलावा हर घर हरियाली अभियान के तहत लोगों को पौधे वितरित किए गए है, ताकि गांव को सिर्फ इंटरनेट क्रांति, बल्कि हरित क्रांति से भी जोड़ा जाए, इससे बोरसर गांव का विकास होगा।

फिल्म अभिनेता ने शुरू की है पहल

दरअसल, युवा अश्विन पाटिल फिल्म नगरी मुंबई में 10 वर्ष बिताने के बाद अपने गांव लौट आए हैं। उन्होंने देखा कि अक्सर बड़े विवाद की वजह छोटी-छोटी गाली-गलौच बनती है, ऐसे में ग्राम पंचायत के जिम्मेदारों और बुजुर्गों के साथ बैठक की। इस बैठक में सर्व सहमति से गांव को गाली मुक्त बनाने का फैसला लिया गया। इस 6 हजार आबादी वाले बोरसर गांव में संस्कार क्रांति की मुहिम छेड़ दी गई है। इसकी निगरानी के लिए 20 पंचों की टीम तैयार की है, जो हर वार्ड में निगरानी करते है।

बोरसर गांव निवीसी अश्विन पाटिल ने कहा छोटी-छोटी गाली-गलौच बड़े विवाद की वजह बनती है। कई बार गांव में इससे दुष्परिणाम देखने को मिलते थे, छोटे-छोटे बच्चों में भी गाली-गलौच की आदत पड़ गई थी। मैंने ग्राम पंचायत के सरपंच अंतरसिंह और उपसरपंच विनोद शिंदे से संपर्क किया, उन्होंने एक बैठक बुलाई, यहां सभी को मौजूदगी में फैसला लिया।

गांव में जगह-जगह पर नोटिस

वहीं, इस फैसले के बाद ग्राम पंचायत ने एक आदेश जारी किया। अब गांव में जगह-जगह नोटिस चस्पाए गए हैं। इस पर लिखा है कि मध्यप्रदेश का पहला गाली मुक्त गांव, ग्राम पंचायत विकसित बोरसर, यहां मां-बहन की गाली देने पर 500 का दंड या एक घंटा गांव की सफाई कराई जाएगी।

गौरतलब है कि बोरसर के उपसरपंच विनोद शिंदे बताते है कि गांव को विकसित बनाने के लिए समाजसेवी अश्विन पाटिल ने सुझाव दिए, युवाओं को फ्री इंटरनेट और ग्रामीणों का पौधे वितरित किए जा रहे है, बच्चों के लिए पुस्तकालय स्थापित किया है।

एमपी में शराब दुकानों का 'टोटका' फेल

15 राउंड के बाद भी 400 दुकानें खाली, अब कौड़ियों के दाम पर नीलामी की तैयारी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए शराब दुकानों की नीलामी सरकार के लिए गले की फांस बन गई है। भारी-भरकम राजस्व लक्ष्य का पीछा कर रहे आबकारी विभाग ने बुधवार को एक बड़ा और चौंकाने वाला फैसला लिया। विभाग ने अनबिकी 400 से अधिक शराब दुकानों के 'बेस प्राइस' में 5 प्रतिशत की अतिरिक्त कटौती कर दी है। अब ये दुकानें अपने मूल बेस प्राइस से 35 प्रतिशत कम कीमत पर ऑफर की जा रही हैं।

कैबिनेट कमेटी के फैसले को किया दरकिनार- हैरानी की बात यह है कि विभाग का यह कदम कैबिनेट की उस उप-समिति के फैसले के खिलाफ है, जिसने इस हफ्ते की शुरुआत में तय किया था कि कीमतें 30 प्रतिशत से ज्यादा कम नहीं की जाएंगी। नीलामी में आ रही दिक्कतों को देखते हुए एक सदस्य ने तो छत्तीसगढ़ की तर्ज पर 'सरकारी निगम' बनाकर दुकानें चलाने का सुझाव तक दे दिया था।

3,000 करोड़ का बड़ा घाटा- राज्य सरकार ने इस साल शराब की नीलामी से 19,000 करोड़ से अधिक जुटाने का लक्ष्य रखा था, जिसके लिए बेस प्राइस में पिछले साल के मुकाबले 20 प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई थी। लेकिन बाजार की बेरुखी ने सरकार के समीकरण बिगाड़ दिए हैं। वर्तमान में विभाग अपने राजस्व लक्ष्य से करीब 3,000 करोड़ पीछे चल रहा है।

आबकारी विभाग के पूर्व अधिकारी का कहना है कि जब राजस्व का लक्ष्य वास्तविकता से परे होता है, तो बाजार इसी तरह प्रतिक्रिया देता है। 35 प्रतिशत की कटौती विभाग की हताशा को दर्शाती है, क्योंकि 400 से ज्यादा दुकानों का बंद रहना सरकार के लिए और भी बड़े घाटे का सौदा है।

अब एक दुकान, एक खरीदार का नया नियम- खरीदारों को लुभाने के लिए विभाग ने अपना पुराना 'ग्रुपिंग सिस्टम' भी खत्म कर दिया है। पहले भोपाल जैसे शहरों में 2 से 5 दुकानों का समूह बनाकर नीलामी होती थी।

भिंड में बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष बोले- 'धर्म से ऊपर राष्ट्र' -इंदौर में पार्षद ने वंदे मातरम् न गाकर शहीदों का अपमान किया

भिंड (नप्र)। भिंड आए बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने इंदौर में कांग्रेस पार्षद द्वारा वंदेमातरम गायन में शामिल न होने पर कड़ी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि आजादी के 75 साल बाद भी कांग्रेस वंदेमातरम् व देशप्रेम की भावना से नहीं जुड़ सकी है। उन्होंने कहा कि वंदेमातरम में शामिल न होने पर इंदौर में कांग्रेस पार्षद न होकर उन शहीदों का अपमान किया है, जिन्होंने देश की आजादी में सर्वश्व न्यौछार कर दिया।

पत्रकारों से औपचारिक बातचीत के दौरान बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष ने कहा कि इंदौर की पार्षद फौजिया शेख अलीम ने धार्मिक भावना के आधार पर वंदेमातरम् गायन करने से इनकार कर दिया है। उन्होंने कहा कि सभी धर्म से ऊपर राष्ट्र है।

राष्ट्रप्रेम की भावना हर व्यक्ति के अंदर होना चाहिए परंतु कांग्रेस राष्ट्रवाद व देशप्रेम की भावना को दिखाती है। उन्होंने कहा कि वंदेमारतम् के डेढ़ सौ साल हो गए। भारत सरकार ने उसके सम्मान में पूरे देश में कार्यक्रम आयोजित किए है।

उन्होंने कहा कि कोई भी धर्म हो। हमारा जो गायन है उसका सम्मान करते है। मैं समझता हूं देश का अपमान है। देश के वीरों का अपमान है। जिन्होंने देश के आजादी के लिए प्राणों की आहूति दी उनका अपमान है। आगे प्रदेशाध्यक्ष ने कहा कि कांग्रेस जोकि स्वयं को राष्ट्रवादी संगठन कहता है। मैं समझता हूं कि वो अपने दल के इस पार्षद के खिलाफ एक्शन भी लेगा और रिएक्शन भी लेगा। इसके बाद प्रदेशाध्यक्ष से सवाल किया गया कि भिंड जिले में पिछले कुछ महीनों में विधायकों से तालमेल होता नहीं दिखा? कुछ महीने पहले भिंड विधायक नरेंद्र सिंह कुशवाह का भिंड के तात्कालीन कलेक्टर संजीव श्रीवास्तव से बंगले पर विवाद हुआ था। इसके बाद लहार विधायक अम्बरीश शर्मा द्वारा धरना प्रदर्शन किया गया। क्या कारण है अधिकारी सुनते नहीं या फिर अनुशासनहीनता है?

इस धरना प्रदर्शन के दौरान उन्होंने भिंड कलेक्टर किरोड़ीलाल मीणा को अक्षम अधिकारी बताया और बिजली कंपनी की उप महाप्रबंधक के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। इस सवाल पर प्रदेशाध्यक्ष ने इस पर चुप्पी साध ली। वहीं साथ में मौजूद भिंड विधायक कुशवाह ने आगे चलने के लिए कहा। इस दौरान सिर्फ इतना कहा कि कई बार इंड्युजल बातें हो जाती है।

इससे पहले उन्होंने कहा कि मैंने आज कार्यकर्ताओं की बैठक ली। संगठन को मजबूत किए जाने के लिए बैठक की। इस दौरान उन्होंने कहा कि भिंड में बीजेपी मजबूत है। आने वाले चुनाव में भिंड से सभी सीटों पर बीजेपी जीतेगी।